State Council of Educational Research & Training, Chhattisgarh

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,छत्तीसगढ़, शंकर नगर, रायपुर

Telephone-0771-2443596 Fax-0771-2443496 Website: www.scert.cg.gov.in Email:scertcg@gmail.com

क्रमांक / परिषद् / SCERT/ODL/ 2018 / 5082 रायपुर, दिनांक 22.11.2018

प्रति,

समस्त अध्ययन केन्द्र

दूरस्थ शिक्षा–SCERTCG-NIOS

PDPET for B.Ed. Teachers (ब्रिज कोर्स) पाठ्यक्रम

विषयः–SCERTCG-NIOS द्वारा संचालित PDPET (ब्रिज कोर्स) पाठ्यक्रम में 521, 522, 523, 524, 525 (SBA) हेतु 10 दिवस सम्पर्क कक्षाएं (Personal Contact Program) आयोजित करने बाबत।

———000———

SCERTCG-NIOS द्वारा दूरस्थ माध्यम से PDPET for B.Ed. Teachers (ब्रिज कोर्स) पाठ्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। PDPET (ब्रिज कोर्स) पाठ्यक्रम में 521, 522, 523, 524, 525 (School Based Activity) हेतु 10 दिवस की सम्पर्क कक्षाएं (Personal Contact Program) का आयोजन किया जाना है।

संपर्क कक्षाओं के संचालन हेतु दिशा निर्देश –

1. ब्रिज कोर्स हेतु सभी केन्द्रों की सूची एवं सभी केन्द्रों को आबंटित ब्रिज कोर्स के प्रशिक्षार्थियों की सूची एस.सी.ई.आर.टी. के वेबसाइट पर उपलब्ध है।
2. ब्रिज कोर्स के सभी प्रशिक्षार्थियों से प्रवेश हेतु पूर्ण रूप से भरा हुआ एवं हस्ताक्षरित स्व–घोषणा पत्र लिया जाना है अन्य दस्तावेज लिये जाने की आवश्यकता नहीं है। स्व–घोषणा पत्र का प्रारूप संलग्न है।
3. ब्रिज कोर्स के सभी प्रशिक्षार्थियों को एस.सी.ई.आर.टी. के वेबसाइट पर दिये गए लिंक में अपनी जानकारी (ई–मेल, मोबाईल नम्बर) की प्रविष्ठि स्वयं करना अनिवार्य है।
4. PDPET (ब्रिज कोर्स) पाठ्यक्रम में प्रतिदिवस केवल दो स्रोत व्यक्तियों के मानदेय का प्रावधान किया गया है। वरिष्ठ स्रोत व्यक्ति (SRP) 10 दिवस, स्रोत व्यक्ति–01 (04 दिवस), स्रोत व्यक्ति–02 (03 दिवस), स्रोत व्यक्ति–03 (03 दिवस के लिये) नियुक्त होंगे।
5. वरिष्ठ स्रोत व्यक्ति किसी एक विषय पर परामर्श प्रदान करेंगें एवं असाइनमेंट का मूल्यांकन भी करेंगे।
6. 10 संपर्क कक्षाओं का आयोजन निम्नानुसार आयोजित किया जायेगा :–

क्र.	दिनांक	क्र.	दिनांक
1.	02 दिसम्बर, 2018	6.	24 दिसम्बर, 2018
2.	09 दिसम्बर, 2018	7.	26 दिसम्बर, 2018
3.	16 दिसम्बर, 2018	8.	27 दिसम्बर, 2018
4.	22 दिसम्बर, 2018	9.	29 दिसम्बर, 2018
5.	23 दिसम्बर, 2018	10.	30 दिसम्बर, 2018

7. संपर्क कक्षाओं की तिथियों में स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार दूरस्थ अध्ययन केन्द्र प्रभारी तिथियों में परिवर्तन कर सकते हैं, परिवर्तन की स्थिति में सूचना संबंधित

प्रशिक्षार्थियों, संबंधित डाइट एवं क्षेत्रीय निदेशक, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान रायपुर को देवें।

8. संपर्क कक्षाओं की अध्ययन सामग्री http://dledbr.nios.ac.in तथा http://scert.cg.gov.in में इलेक्ट्रानिक माध्यम में उपलब्ध है इसका उपयोग किया जाना है।
9. संपर्क कक्षाओं की समय–सारणी अध्ययन केन्द्र स्तर पर ही निर्धारित किया जाना है। इसलिये राज्य स्तर से समय–सारणी उपलब्ध नहीं करायी जायेगी।
10. प्रशिक्षार्थियों को स्वयं पोर्टल पर पंजीयन कराना अनिवार्य होगा। प्रशिक्षार्थियों से स्वयं पोर्टल पर उपयोग किए गए मोबाइल नम्बर एवं ई–मेल एड्रेस उपस्थिति पंजी में लिखवा लें।
11. सभी प्रशिक्षार्थियों को सूचित हो कि स्वयंप्रभा डी.टी.एच. के चैनल क्रमांक 32 पर 24 x 7 विडियो लेक्चर का प्रसारण किया जा रहा है।
12. अध्ययन केन्द्र प्रभारी 521, 522, 523, 524, 525 (SBA) के सभी असाइनमेंट दिनांक 27 दिसम्बर, 2018 तक जमा करायें एवं शीघ्र मूल्यांकन कर लें जिससे अंकों की प्रविष्टि की सुविधा ऑनलाईन उपलब्ध होते ही NIOS के वेबसाइट पर कराई जा सके।
13. असाइनमेंट अंग्रेजी माध्यम वाले प्रशिक्षार्थी अंग्रेजी में एवं हिन्दी माध्यम वाले प्रशिक्षार्थी हिन्दी में, हस्तलिखित सादे कागज (लाईन वाली अथवा कोरे) में जमा करेंगे।
14. समस्त प्रशिक्षार्थियों को संपर्क कक्षा में प्रथम दिवस स्पष्ट निर्देश दें, कि संपर्क कक्षा (PCP) के सभी 10 संपर्क कक्षाओं में से 07 दिवस की उपस्थिति अनिवार्य होगी।

संलग्नः उपरोक्तानुसार

Sunita

(डॉ. सुनीता जैन)
अतिरिक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी.,छत्तीसगढ़

पृ. क्रमांक / परिषद् / SCERT/ODL/ 2018 / 5083 रायपुर, दिनांक 21.11.2018

प्रतिलिपि –

1. अध्यक्ष, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान, नई दिल्ली।
2. सचिव, छ.ग. शासन, स्कूल शिक्षा विभाग, मंत्रालय, महानदी भवन, अटल नगर, रायपुर।
3. संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, इन्द्रावती भवन, अटल नगर, रायपुर को सूचनार्थ।
4. प्रबंध संचालक, राजीव गांधी शिक्षा मिशन, रायपुर को सूचनार्थ।
5. समस्त कलेक्टर को सूचनार्थ।
6. क्षेत्रीय संचालक, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान, रायपुर को आवश्यक कार्यवाही हेतु।
7. डी.पी.सी.सी., पश्चिम क्षेत्र , नोएडा
8. प्राचार्य, डाइट ..... को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।
9. जिला शिक्षा अधिकारी ..... को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।

Sunita

अतिरिक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी.,छत्तीसगढ़

कार्यक्रम: SCERTCG-NIOS PDPET (Bridge Course) 2018-19

स्व–घोषणा पत्र (Self Declaration Form)

1 रिफरेंस क्रमांक (Ref. No.) – B 2 2

2 इनरोलमेंट क्रमांक (Enrollment No.)

3 शिक्षक का नाम – _____

4 आधार में नाम (अंग्रेजी के केपिटल लेटर में) _____

5 पिता/पति का नाम – _____

6 माता का नाम – _____

7 जन्मतिथि

8 पत्र व्यवहार का पता : _____

_____

9 ई–मेल _____

10 मोबाइल नंबर

11 विद्यालय का यूडाइस कोड (वर्तमान में)

12 विद्यालय का नाम (हिन्दी में) _____

(अंग्रेजी केपिटल लेटर में) _____

13 जिला _____

14 विकासखण्ड _____ पिन कोड

15 लिंग (MALE/FEMALE/Third Gender) _____

16 वर्ग (SC/ST/OBC/GEN) _____

17 नियुक्ति तिथि/ज्वाईनिंग तिथि (वर्तमान विद्यालय में) _____

18 कर्मचारी कोड (केवल शासकीय शिक्षकों हेतु) _____

19 पद _____

20 बी.एड. उत्तीर्ण करने का वर्ष

21 महाविद्यालय का नाम _____

22 विश्वविद्यालय का नाम _____

23 स्नातक मे विषयः गणित /जीव विज्ञान /अन्य _____

24 परीक्षा का माध्यम – हिन्दी/अंग्रेजी _____

25 स्वयं पोर्टल पर पंजीकृत ई–मेल _____

26 स्वयं पोर्टल पर पंजीकृत मोबाइल नंबर _____

27 स्टडी सेंटर का कोड **4 7 2 2**

28 स्टडी सेंटर का नाम _____

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्त जानकारी मेरी जानकारी में सत्य है एवं मैं ब्रिज कोर्स हेतु पात्र हूं। भविष्य में यदि कोई जानकारी असत्य पाई जाती है तो इसके लिये मैं स्वयं पूर्णतः जिम्मेदार रहूंगा ।

प्रशिक्षु शिक्षक के हस्ताक्षर

मोबाइल नंबर

प्रारंभिक शिक्षकों हेतु व्यावसायिक विकास कार्यक्रम
(पी.डी.पी.ई.टी)

पाठ्यक्रम-521
प्रारंभिक शिक्षा संदर्भ, सरोकार और चुनौतियाँ

खण्ड-1
संदर्भ और प्रारंभिक शिक्षा का महत्त्व

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
A-24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,
गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309
वैबसाइट : www.nios.ac.in

खण्ड-1

संदर्भ और प्रारंभिक शिक्षा का महत्त्व

इकाई 1 : भारत में प्रारंभिक शिक्षा का परिदृश्य

इकाई 2 : प्रारंभिक शिक्षा में समकालीन सरोकार

इकाई 3 : भारत में प्रारंभिक-शिक्षा की प्रगति

खण्ड–2

प्रारंभिक शिक्षा में चुनौतियाँ

इकाई 4 : शिक्षक एक पेशेवर के रूप में

इकाई 5 : प्रारंभिक शिक्षा में गुणवत्ता

इकाई 6 : अधिगमकर्ताओं का समग्र विकास

टिप्पणी

ईकाई 1 : भारत में प्रारंभिक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य

सरंचना

1.0 प्रस्तावना

1.1 अधिगम उद्देश्य

1.2 वैदिक काल में शिक्षा

1.3 बौद्धकालीन भारतीय शिक्षा

1.4 मध्यकालीन भारतीय शिक्षा

1.5 कालोनी युग में प्रारंभिक शिक्षा का विकास

1.6 ब्रिटिश काल में प्रारंभिक शिक्षा का विकास

1.7 नई तालीमः महात्मा गांधी की मौलिक शिक्षा की अवधारणा

1.8 शिक्षा के लिए संवैधानिक प्रावधान

1.9 प्रारंभिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण

1.9.1 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 में प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण संबंधी अनुशंसाएं

1.9.2 नई शिक्षा नीति 1986 में प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण संबंधी अनुशंसाएं

1.10 सभी के लिए शिक्षा (ई.एफ.ए.) आंदोलन

1.11 प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण संबंधी प्रमुख कदम

1.11.1 आपरेशन ब्लैकबोर्ड

1.11.2 जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.)

1.11.3 सर्व शिक्षा अभियान

1.11.4 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना

1.11.5 मध्यान्ह भोजन योजना

1.11.6 शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009

1.12 सारांश

1.13 प्रगति जाँच के उत्तर

1.14 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.15 अन्त्य इकाई अभ्यास

1.0 प्रस्तावना

प्राचीन भारत का, केवल भारत ही नहीं अपितु समूचे विश्व के लिए सर्वोत्तम योगदान, शिक्षा के क्षेत्र में रहा है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि शिक्षा एक अमूर्त अवधारणा है जो सांस्कृतिक, आर्थिक, व्यक्तिगत, दार्शनिक, वैज्ञानिक, सामाजिक एवं आत्मिक विकास में निहित है। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति एवं समाज की भलाई के लिए, मानसिक या बौद्विक विकास आवश्यक है जो शिक्षा द्वारा ही संभव है। प्राचीन समय से ही भारत का अधिगम एवं शिक्षा के क्षेत्र में सुनहरा अतीत रहा है। सिंधु घाटी की सभ्यता के स्थानों

टिप्पणी

इकाई 2 : प्रारंभिक शिक्षा में समकालीन सरोकार

सरंचना

2.0 *प्रस्तावना*

2.1 *अधिगम उद्देश्य*

2.2 *शिक्षा एक अधिकार*

2.3 *शिक्षा के अधिकार की उत्पत्ति*

2.4 *शिक्षा का अधिकार : अपेक्षाएँ और चुनौतियाँ*

2.5 *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाः प्रारम्भिक शिक्षा से सम्बंधित मुद्दों और सरोकारों की आलोचनात्मक समझ*

– *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005*

2.6 *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन सी एफ) 2005 औरविद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन सी एफ एस ई) 2000 में अंतर*

2.7 *शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2009: प्रारम्भिक शिक्षा से सम्बंधित निहितार्थ*

2.8 *सारांश*

2.9 *प्रगति जाँच के उत्तर*

2.10 *संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें*

2.11 *शब्दावली*

2.12 *अन्त्य इकाई अभ्यास*

2.0 प्रस्तावना

इस इकाई के अंतर्गत हम प्रारंभिक शिक्षा के कुछ समकालीन मुद्दों पर विचार विमर्श करेंगे। उद्देश्य यह है कि किसी भी कार्य के सफल निष्पादन के लिए उसके परिवेश के बारे में समझ रखना आवश्यक होता है और यही बात हमारे शिक्षण कार्य के बारे में भी लागू होती है। कार्य–सन्दर्भ की समझ हमारे कार्य को एक प्रकार का तार्किक अनुक्रम और लय प्रदान करती है। जो कि हम मनुष्यों की एक नैसर्गिक आवश्यकता है कि हम जीवन के हर एक पक्ष में लय खोजने का प्रयास करते है। इसके अलावा प्रायः प्रत्येक मानव क्रिया उद्देश्यपूर्ण और तार्किक होती है। वृहद् प्रयोजनों की समझ से हम अपने निजी उद्यम (शिक्षण) को तार्किक, सार्थक और लक्ष्य उन्मुखी बना सकते हैं। अतः हम सभी शिक्षकों का यह दायित्व तथा आवश्यकता है कि हम प्रारंभिक शिक्षा के समकालीन प्रयोजनों को समझें और तदनुरूप व्यवहार करें, अर्थात अपने शिक्षण व्यवहार को परिशोधित कर वृहद लक्ष्य (शिक्षा का सार्वभौमिकरण) की प्राप्ति को सुनिश्चित करें।

शिक्षा एक मूल अधिकार ही नहीं अपितु यह एक नैसर्गिक व जैविक अधिकारहै। स्वतंत्र भारत के शिल्पकारों ने इस बात को समझा था और हमारे संविधान में इसे राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में स्पष्ट किया था कि राज्य संविधान लागू होने के एक दशक के अन्दर 6 से 14 वर्ष के समस्त बच्चो को प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था करे। यही दर्शन आगे चलकर 2002 में संविधान के 86वें संशोधन द्वारा अनुच्छेद 21(क) के अंतर्गत प्रत्येक भारतीय बच्चे के मूल अधिकार के रूप में सामने आया। इस मूल अधिकार को सुनिश्चित करने हेतु 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009' पारित कर 1 अप्रैल 2010 को समस्त देश में लागू कर दिया गया। 'शिक्षा का अधिकार' की अवधारणा को मूर्त रूप में लाना हमारे देश की 21वीं शताब्दी में एक प्रमुख

टिप्पणी

इकाई–3 : भारत में प्रारंभिक शिक्षा की प्रगति

संरचना

3.0 प्रस्तावना/परिचय

3.1 अधिगम उद्देश्य

3.2 प्रारंभिक शिक्षा: प्रवृत्तियाँ

3.3 भारत में प्रारंभिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति

3.3.1 महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम जिन्होंने भारत में शिक्षा के विकास को मार्गदर्शित किया

3.3.2 राजकीय प्रारंभिक विद्यालयों में बुनियादों सुविधाएं

3.3.3 भारत के प्रारंभिक विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन

3.3.4 प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों की ड्राप आउट प्रतिधारण और संक्रमण दर

3.3.5 भारत में प्रारंभिक शिक्षा-स्तर पर विद्यार्थी शिक्षक अनुपात

3.4 भारत में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर योजनाएं और हस्तक्षेप

3.5 भारत में प्रारंभिक शिक्षा में चुनौतियां

3.6 सारांश

3.7 संक्षिप्त नाम/शब्द-कोष

3.8 प्रस्तावित अध्ययन और संदर्भ

3.9 इकाई अंत अभ्यास

3.0 प्रस्तावना

भारत में सभी बच्चों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा संवैधानिक प्रतिबद्धता है और इस शैक्षिक आंदोलन का लक्ष्य प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के उद्देश्य को प्राप्त करना है। भारतीय शिक्षा प्रणाली संभवत: विश्व भर में सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है जो प्रारंभिक स्तर से विश्व-विद्यालय स्तर तक के विविध आर्थिक पृष्ठ-भूमि के कई मिलियन विद्यार्थियों की आवश्यकता पूर्ति करती है जो दबाव, चिंता और भय से मुक्त हो, क्योंकि यह 6-14 वर्ष के सभी बच्चों को 'बच्चों का नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के प्रावधान के अन्तर्गत नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार प्रदान करती है।

प्रारंभिक शिक्षा की पृष्ठभूमि

भारत में प्रारंभिक शिक्षा के इतिहास और विकास की चर्चा करने से पूर्व हमें भारत में प्रारंभिक शिक्षा की पृष्ठ-भूमि को देखना चाहिए। भारत में पूर्व समय के संस्थानों जैसे- नालंदा और तक्षशिला शिक्षा की लम्बी परंपरा रही है। उस समय भारतीय शिक्षा विद्यालयों के साथ विकसित हुई। जैसे- पाठशालाएं। इनमें भारत में इस्लामिक शासन के दौरान मदरसों को भी जोड़ा गया। ऐसे प्रारंभिक विद्यालयों ने उत्कृष्ट परंपरागत अधिगम प्रदान किया। अठारहवीं शताब्दी के अंत तक प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों को शिक्षित करने के लिए एक ग्राम आधारित स्वदेशी शिक्षण-प्रणाली का विकास हो गया। 1990 के दशक के पश्चात् कई सकारात्मक कदम उठाए गए और बच्चों को शिक्षित करने के महत्त्व को स्वीकारने के साथ प्रारंभिक शिक्षा की माँग बढ़ गई है।

टिप्पणी

ईकाई–4 : शिक्षक एक पेशेवर के रूप में

सरंचना

4.0 प्रस्तावना

4.1 अधिगम उद्देश्य

4.2 अध्यापक और अध्यापन का भारतीय पर्याय

4.3 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली

4.4 अध्यापक – एक गुरु के रूप में

4.5 वर्तमान में शिक्षक की भूमिका का आविर्भाव

4.6 परिवर्तनकारी नेतृत्व

4.7 सहभागी शासन

4.8 एक चिंतनशील पेशेवर के रुप में शिक्षक

4.9 व्यवसायिक विकास

4.9.1 भारत में शिक्षण संबंधी व्यवसायिक कोर्स

4.10 शिक्षण क्षमता

4.10.1 शिक्षण क्षमता की आवश्यकता

4.11 व्यवसायिक प्रतिबद्धता

4.12 अध्यापन व्यवसाय में नैतिकता एवं आचरण

4.13 सारांश

4.14 प्रगति जाँच के उत्तर

4.15 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.16 अन्त्य इकाई अभ्यास

4.0 प्रस्तावना

शिक्षण एक ऐसा व्यवसाय है जो लोगों के विकास में सकारात्मक भूमिका निभाता है। अध्यापन दुनिया के सभी व्यवसायों में सबसे अच्छा और आदर्श व्यवसाय माना जाता है क्योंकि अध्यापक निःस्वार्थ, कर्तव्यनिष्ठा के द्वारा किसी के जीवन को संवारता है।

एक पेशेवर अध्यापक को चाहिए कि वह अपना अधिकतर समय व ऊर्जा अपने विषय के अध्यापन में लगाए। किसी अन्य व्यवसाय में न चुने जाने पर लोगों को अध्यापन अपना अन्तिम विकल्प नहीं मानना चाहिए। अध्यापन व्यवसाय में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अध्यापक को अध्यापन के प्रति प्रेम और जुनून होना चाहिए। अगर अध्यापक को अपने कार्य के प्रति प्रेम नहीं है तो वह अपने अध्यापन कार्य को विद्यार्थियों के लिए रुचिपूर्ण नहीं बना सकता है।

किसी भी प्रभावी अध्यापन प्रक्रिया में निम्नलिखित पहलू शामिल होते हैं:–

– विषयवस्तु की समझ।

– विद्यार्थियों की विशिष्ट अधिगम आवश्यकताओं की पहचान।

टिप्पणी

इकाई - 5 : प्रारम्भिक शिक्षा में गुणवत्ता

संरचना

5.0 प्रस्तावना

5.1 अधिगम उद्देश्य

5.2 गुणवत्ता एक मूलभूत चिंता

5.3 गुणवत्ता सूचक

5.3.1 प्रारंभिक शिक्षा में गुणवत्ता के वैश्विक सूचक

5.3.2 शिक्षा में गुणवत्ता के भारतीय आयाम

5.4 गुणवत्ता सुनिश्चयन

5.4.1 कक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करना

5.4.2 विद्यालय में गुणवत्ता सुनिश्चित करना

5.5 समग्र गुणवत्ता प्रबन्धन

5.5.1 समग्र गुणवत्ता प्रबन्धन-अवधारणात्मक बोध

5.5.2 प्रारम्भिक शिक्षा में समग्र गुणवत्ता प्रबन्धन

5.6 शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में अध्यापक की भूमिका

5.7 सारांश

5.8 प्रगति जाँच के उत्तर

5.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

5.0 प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता पर अक्सर प्रश्न उठाए जाते हैं। कभी-कभी हम गुणवत्ता के विषय में इतना सुनते हैं कि हम उलझन में पड़ पाते हैं कि गुणवत्ता क्या है? केवल हमारे अपने बुद्धिजीवियों द्वारा ही नहीं, बल्कि विभिन्न वैश्विक संस्थाओं तथा संगठनों द्वारा भी भारत में प्रारम्भिक शिक्षा की गुणवत्ता के विषय में टिप्पणी की वाती है। गुणवत्ता सदैव व्यक्तिपरक धारणा है। तथा यह व्यक्ति एवं स्थान के अनुसार बदलती रहती है। आप की गुणवत्ता से सम्बन्धित कुछ क्षेत्रों में प्रश्नों के साक्षी रहे होंगे। शिक्षण अधिगम सामग्री, शिक्षकों की गुणवत्ता एवं शिक्षण प्रक्रिया, पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, आधारभूत सुविधाओं की गुणवत्ता आदि। वर्तमान इकाई प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता के विभिन्न विचारों पर ही रही बहस पर चर्चा। तथा गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत करेगी। इकाई प्रारम्भिक शिक्षा में समग्र गुणवत्ता प्रबंधन की अवधारणा की उपयोगिता पर भी प्रकाश डालेगी। आपके विद्यालय में गुणवत्ता की शिक्षा सुनिश्चित करने में आपकी भूमिका की थी इस इकाई में चर्चा की जाएगी।

5.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में एक मुख्य प्रवोजन के रूप में गुणवत्ता की अवधारणा को समझ सकेंगे,
- प्रारम्भिक शिक्षा में गुणवत्ता के वैश्विक संकेतकों समालोचना कर सकेंगे,
- भारतीय परिप्रेक्ष्य में गुणवत्ता सूचकों का निर्धारण कर सकेंगे,

टिप्पणी

इकाई-6 : अधिगमकर्ताओं का समग्र विकास

संरचना

6.0 प्रस्तावना

6.1 अधिगम उद्देश्य

6.2 नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास

6.2.1 नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास का अर्थ

6.2.2 नैतिक विकास की अवस्थाएं

6.2.3 आध्यात्मिक विकास की अवस्थाएं

6.3 मूल्य संकट एवं मूल्य संक्रमण

6.3.1 मूल्यों का ह्रास

6.3.2 मूल्य संकट के कारण

6.3.3 मूल्यों में परिवर्तन

6.4 विकास की आवश्यकता

6.5 मूल्यों की पहचान एवं सांस्कृतिक आयाम

6.5.1 हमें मूल्यों की पहचान करने की आवश्यकता क्यों है?

6.5.2 सांस्कृतिक मूल्य

6.5.3 धार्मिक मूल्य

6.5.4 राष्ट्रवादी मूल्य

6.6 मूल्य विकास के उपागम

6.6.1 पाठ्यक्रम संबंधी क्रियाकलापों द्वारा मूल्य

6.6.2 पाठ्यक्रम क्रियाओं द्वारा मूल्यों का विकास

6.6.3 पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाकलापों द्वारा मूल्यों का विकास

6.7 लैंगिक संवेदनशीलता

6.7.1 लैंगिक संवेदनाशीलता का अर्थ

6.7.2 लैंगिक संवेदनशीलता क्यों आवश्यक है?

6.7.3 लैंगिक संवेदनशीलता विकसित करना

6.8 मूल्य विकास के लिए पाठ्यक्रम व उसका क्रियान्वयन

6.8.1 पाठ्यक्रम व मूल्य विकास में संबंध

6.8.2 पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन कैसे किया जा सकता है।

6.9 मूल्य विकास के लिए पाठ्यक्रम क्रियान्वयन

6.9.1 मूल्य शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम क्रियान्वयन के तरीके

6.10 सारांश

6.11 प्रगति जाँच के उत्तर

6.12 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.13 अन्त्य इकाई अभ्यास

6.0 प्रस्तावना

मानवजाति ने बहुत विकास किया है जिसका श्रेय शिक्षा व तकनीकी को दिया जा सकता है। इस विकास प्रक्रिया में हम

प्रारंभिक शिक्षकों हेतु व्यावसायिक विकास कार्यक्रम
(पी.डी.पी.ई.टी)

पाठ्यक्रम-522
प्रारंभिक विद्यालयी बच्चों की समझ

खण्ड-1
बच्चा और बचपन : सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
A-24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,
गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309
वैबसाइट : www.nios.ac.in

खण्ड-1
बच्चा और बचपन : सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ

इकाई 1 : बच्चा और बचपन की समझ

इकाई 2 : बचपन से किशोरावस्था में परिवर्तन

इकाई 3 : बच्चों के अधिकार

खण्ड-2
अधिगम को सुसाध्य बनाना

इकाई-4: बच्चे कैसे सीखते हैं?

इकाई-5: बचपन के सरोकार

इकाई-6: प्रेरक अधिगम वातावरण का सृजन करना

टिप्पणी

इकाई–1 : बच्चा और बचपन की समझ

सरंचना

1.0 प्रस्तावना

1.1 अधिगम उद्देश्य

1.2 विकास की पूर्व अवस्थायें

1.3 बाल्यावस्था का प्रत्यय

1.4 पारंपरिक भारतीय मूल में बालक

1.5 विभिन्न द्रष्टिकोण एवम बाल्यावस्था की समस्यायें

1.5.1 मनोवैज्ञानिक

1.5.2 सांस्कृतिक–सामाजिक (उपेक्षित वर्ग, लिंग द्रष्टिकोण, प्रथम पीड़ी बालक तथा विकलांगता आदि)

1.5.3 कानून

1.6 परिवार, पड़ोस, स्कूल एवम शिक्षक की भूमिका

1.7 सारांश

1.8 प्रगति जाँच के उत्तर

1.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.10 शब्दावली

1.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

1.0 प्रस्तावना

हम सभी के लिए बाल्यावस्था हमारे जीवन का एक अनोखा काल है, एक ऐसा अनोखा काल जिसमें बालक में अनोखे परिवर्तन होते हैं। यह अवस्था वास्तव में हम सभी के जीवन का वह स्वर्णिम समय है, जिसमें बालक का सर्वांगीण विकास होता है। इस इकाई में हम विकास की पूर्व अवस्थाओं, बाल्यावस्था में होने वाले विभिन्न विकासों, बालक एवम बाल्यावस्था के प्रत्यय, बाल्यावस्था में बालकों द्वारा महसूस की जाने वाली विभिन्न समस्यायों एवम बाल्यावस्था में परिवार, पड़ोस, स्कूल एवम शिक्षक की भूमिका के विषय में विस्तारपूर्वक चर्चा करेंगे।

1.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपः

- विकास की पूर्व अवस्थाओं को समझ सकेंगे।
- प्रारंभिक बाल्यावस्था व उत्तर बाल्यावस्था में होने वाले विभिन्न विकासों का विस्तारपूर्वक वर्णन कर सकेंगे।
- बालक एवम बाल्यावस्था के प्रत्यय को स्पष्ट कर सकेंगे।
- बाल्यावस्था में होने वाली विभिन्न समस्यायों की चर्चा कर सकेंगे।
- बाल्यावस्था में परिवार, पड़ोस, स्कूल एवम शिक्षक की भूमिका का विस्तारपूर्वक वर्णन कर सकेंगे।

इकाई – 2 : शैशवावस्था से किशोरावस्था में परिवर्तन

सरंचना

2.0 प्रस्तावना

2.1 अधिगम उद्‌देश्य

2.2 शैशवावस्था से किशोरावस्था का बोध

2.3 विकासात्मक परिवर्तन

2.3.1 ज्ञानात्मक विकास

2.3.2 संवेगात्मक विकास

2.3.3 सामाजिक विकास

2.4 किशोरावस्था की समस्याएँ

2.5 किशोरों की आवश्यकताएँ व आकांक्षाएँ

2.5.1 व्यवसायिक

2.5.2 लैंगिक

2.5.3 वैयक्तिक

2.5.4 मनोरंजनात्मक

2.5.5 स्वास्थ्य

2.6 विकासात्मक कार्य और शिक्षक की भूमिका

2.7 सारांश

2.8 प्रगति जाँच के उत्तर

2.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

2.0 प्रस्तावना

प्राथमिक अवस्था के विद्यालयी बालकों को समझने के साथ ही यह भी आवश्यक है कि जो विकासात्मक परिवर्तन बाल्यावस्था से किशोरावस्था में होते हैं उनकी भी सकारात्तमक दृष्टिकोण से पहचान की जाती है। एक बालक में बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश करने के मध्य जो भी परिवर्तन होते हैं वे सब एक शिक्षक के लिये आवश्यक रूप से जानने योग्य होते हैं क्योंकि वे परिवर्तन ज्ञानात्मक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास से संबंधित होते हैं जो समय-समय पर बालक के व्यक्तित्व में दिखाई देते हैं। इसी प्रक्रिया के अंतर्गत शिक्षक के लिये उन समस्याओं पर भी ध्यान देना आवश्यक होता है जिन्हें किशोरों को सामना करना पड़ता है। अत: यह शिक्षक के लिये महत्त्वपूर्ण है कि वह किशोरों की विकासात्मक समस्याओं को समझे। यह भी अति महत्त्वपूर्ण है कि शिक्षक किशोरों की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं को व्यवसायिक, लैंगिक, वैयक्तिक, मनोरंजनात्मतक व स्वास्थ्य संबंधी सन्दर्भों के परिपेक्ष्य में समझे व उस पर अपना ध्यान केंद्रित करें।

अत: प्रस्तुत इकाई बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर अग्रसर होने में होने वाले परिवर्तनों से संबंधित है–

टिप्पणी

इकाई - 3 : बच्चों के अधिकार

संरचना

3.0 प्रस्तावना
3.1 अधिगम उद्देश्य
3.2 भारतीय परिप्रेक्ष्य में बाल अधिकार
3.3 राष्ट्रीय नीतियाँ एवम् विधान/कानून
3.4 बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र संघ का कन्वेशंन 1989
3.5 बाल-अधिकारों की सुरक्षा: बाल-अधिकारों की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय आयोग (एन.सी.पी.सी.आर.) की भूमिका: बाल अधिकारों की अवहेलना के परिप्रेक्ष्य में शिकायतों को संबोधित करना
3.6 बाल उत्पीड़न से सुरक्षा
3.7 विद्यालय और बाल अधिकार
3.8 अभिभावकों को परामर्श देना
3.9 सारांश
3.10 प्रगति जाँच के उत्तर
3.11 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी
3.12 अन्त्य इकाई अभ्यास

3.0 प्रस्तावना

'बच्चे राष्ट्र का भविष्य हैं' यह सुनते हुए हम बड़े हुए हैं। निस्संदेह वे हैं भी। बच्चे एक राष्ट्र की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संपत्ति हैं। साथ ही वे अतिसंवेदनशील और छाप छोड़ने वाले हैं। बचपन के अनुभव पूरे जीवनकाल तक विद्यमान रहते हैं। इसलिए उनका स्वस्थ एवं समग्र विकास सुनिश्चित किया जाना मूल रूप से महत्त्वपूर्ण है। भारतीय संविधान ने विभिन्न धाराओं द्वारा बच्चों के महत्त्व को पहचाना है, जिनका अध्ययन आप इस इकाई में करेंगे। अंतर्राष्ट्रीय संगठन जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ के अतिरिक्त भारत सरकार ने भी कई नियम पारित किए हैं। इतना होने पर भी विश्व-भर में बाल-शोषण, बाल-अधिकारों का हनन बहुत अधिक मात्रा में व्याप्त है। एक प्रारम्भिक विद्यालय के शिक्षक के रूप में आपके लिए बाल-अधिकारों संबंधी मुद्दों को जानना बहुत महत्त्वपूर्ण है। विद्यालय के बाहर आपके विद्यार्थियों के जीवन में क्या हो रहा है? तथा आप उन्हें और उनके परिवार को किस प्रकार सहायता दे सकते हैं? इसके प्रति संवेदनशील और सावधान रहें।

3.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:

- बाल-अधिकारों को परिभाषित कर लेंगे।
- बाल-अधिकारों के संदर्भ में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं पर चर्चा कर लेंगे।
- विभिन्न प्रकार के बाल-अधिकारों का उल्लघंन तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की स्थितियाँ जहाँ बाल-अधिकारों का उल्लघंन हो सकता है। की पहचान कर लेंगे।
- बाल-अधिकारों के संदर्भ में अभिभावकों को परामर्श देने में समर्थ होंगे।

3.2 भारतीय परिप्रेक्ष्य में बाल अधिकार

बाल-अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र संघ सम्मेलन, 1990 (यूएनसीआरसी) एक बच्चे को इस प्रकार परिभाषित करता है–''18 वर्ष से कम उम्र के सभी व्यक्ति, जब तक कि नियमानुसार पहले ही (कम उम्र में) युवावस्था प्राप्त हो गई हो। हमारे

टिप्पणी

इकाई : 4 बच्चे कैसे सीखते हैं?

संरचना

4.0 प्रस्तावना

4.1 अधिगम उद्देश्य

4.2 अधिगम प्रक्रिया का प्राचीन भारतीय परिप्रेक्ष्य

4.2.1 श्रवण

4.2.2 मनन

4.2.3 निध्यासन (बुद्धिमत्ता या आत्म-एहसास)

4.3 ज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएं और अधिगम

4.3.1 ज्ञानात्मक विकास-अवस्था विकास सिद्धान्त

4.3.2 ज्ञानात्मक विकास में अधिगम प्रक्रिया

4.3.3 ज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएं

4.4 वैयक्तिक अधिगम

4.4.1 स्व-अधिगम

4.4.2 मुक्त अधिगम

4.4.3 ज्ञान संरचना के रूप में अधिगम

4.5 अधिगम के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयाम

4.6 बच्चे के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में अधिगम का सहजीकरण

4.6.1 घर में अधिगम

4.6.2 विद्यालय में अधिगम

4.6.3 समुदाय के साथ सीखना/अधिगम

4.6.4 प्रकृति से अधिगम

4.7 सारांश

4.8 प्रगति जाँच के उत्तर

4.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

4.0 प्रस्तावना

मानव-जीवन घटनाओं से परिपूर्ण है और प्रत्येक घटना से किसी न किसी प्रकार का सीखना (अधिगम) होता है। उदाहरण के लिए यदि हमने बचपन में साइकिल चलाई हो तो स्कूटर या कार चलाने में सहजता होती है। परन्तु आपने कभी कल्पना की है कि आप साइकिल चलाना कैसे सीखते हैं। यदि आप याद करें कि आपके बड़ों ने आपको साइकिल में चढ़ने, उसमें पैडल मारने, साइकिल को संतुलित करने और उसे रोकने के लिए कैसे निर्देश दिए थे। उन निर्देशों के आधार पर आप साइकिल पर चढ़ते हैं, कोई बड़ा व्यक्ति इसे पकड़ता है और धीरे से धकेलता है, और फिर जोर से इससे अलग हो जाता है। साइकिल आगे जाती है, फिर पीछे आती है और फिर आगे जाती है। आप लगातार सजग होकर संतुलन बनाते हैं और कई बार अभ्यास के बाद आप साइकिल आराम से चला लेते हैं। इसी प्रकार हमारे जीवन में बहुत से उदाहरण हैं जहाँ

टिप्पणी

इकाई-5 : बचपन के सरोकार

संरचना

5.0 प्रस्तावना
5.1 अधिगम उद्देश्य
5.2 बाल्यावस्था की सामान्य विशेषताएं
5.3 बाल्यावस्था की चिंताएं
5.3.1 स्वास्थ्य एवं स्वच्छता
5.3.2 महत्त्वपूर्ण ध्यान रखने योग्य बातें
5.3.3 बच्चों को स्वच्छता का शिक्षण
5.3.4 विद्यालय स्वच्छता
5.4 सामाजिक भावनात्मक समस्याओं की चिंताएं
5.5 विद्यालय, परिवार और मीडिया की भूमिका
5.5.1 विद्यालय की भूमिका
5.5.2 परिवार की भूमिका
5.5.3 मीडिया की भूमिका
5.6 सारांश
5.7 प्रगति जाँच के उत्तर
5.8 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें
5.9 अन्त्य इकाई अभ्यास

5.0 प्रस्तावना

6 वर्ष से 12 वर्ष तक की आयु की अवधि बाल्यावस्था के अंतर्गत आती है। इसकी विकासात्मक विशेषताओं को ध्यान पर रखते हुए इसे पुन: दो भागों में बांटा जा सकता है- पूर्व बाल्यावस्था :- 6-8 वर्ष तक और उत्तर बाल्यावस्था:- 9 वर्ष से 12 वर्ष तक। उत्तरबाल्यावस्था मनोवैज्ञानिक रूप से अधिक सार्थक प्रतीत होती है, इसीलिए इसको आभासी परिपक्वता की अवस्था भी कहा जाता है। बाल्यावस्था सामान्यत: विद्यालयी अवस्था के रूप में जानी जाती है, जिसमें बच्चा विद्यालय में पढ़ने और लिखने में सक्षम होता है। औपचारिक-विद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने हेतु इस अवस्था में बच्चा आवश्यक मानसिक परिपक्वता अर्जित कर लेता है। इस इकाई में आप बाल्यावस्था की विभिन्न चिंताओं के बारे में अध्ययन करेंगे।

5.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप-

- बाल्यावस्था की अवधारणा को परिभाषित कर देंगे।
- बाल्यावस्था की चिंताओं का वर्णन कर लेंगे।
- अच्छे स्वास्थ्य और स्वच्छता का महत्त्व बतायेंगे।
- बाल्यावस्था की सामाजिक भावनात्मक समस्याओं से संबंधित चिंताओं के बारे में चर्चा करेंगे।
- बाल्यावस्था में स्वास्थ्य और स्वच्छता के संबंध में विद्यालय की भूमिका की व्याख्या कर देंगे।
- बाल्यावस्था के दौरान सामाजिक-भावनात्मक समस्याओं के संबंध में परिवार और मीडिया की भूमिका का वर्णन करेंगे।

टिप्पणी

इकाई-6 : प्रेरक अधिगम वातावरण का सृजन करना

संरचना

6.0 प्रस्तावना

6.1 अधिगम उद्देश्य

6.2 प्रेरक अधिगम वातावरण के मुख्य लक्षण

6.2.1 अधिगम एवं अधिगमकर्ता की समझ

6.2.2 अधिगमकर्ता में तत्परता का महत्त्व

6.2.3 बच्चों की जरूरतों के लिए विद्यालय के कार्य की सार्थकता की भूमिका

6.2.4 अधिगमकर्ताओं की जरूरतों की प्रकृति का विकास

6.2.5 अधिगम को सुसाध्य करने में उद्देश्यों एवं प्रोत्साहनों का उपयोग

6.3 भारतीय परिदृश्य में अधिगम वातावरण

6.4 समावेशी कक्षाकक्ष वातावरण

6.5 शिक्षकों एवं शैक्षणिक प्रशासकों की भूमिका

6.6 सारांश

6.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

6.0 प्रस्तावना

''मैं सीखना पसंद करता हूँ, किंतु पढ़ाये जाने से घृणा'' —*विसंटन चर्चिल*

यदि पानी को एक बाल्टी में एक निश्चित दर से डाला जाये, तो यह स्थिरता से और समान रूप से भर जायेगा। क्या इस अनुरूपता को अधिगम से समीकृत किया जा सकता है? हम देखते हैं, एक अनिवार्यत: निष्क्रिय अधिगमकर्ता (बाल्टी) को ज्ञान (पानी) से यदि अधिगम स्थिरता से हो (भरा जहाँ) तो अध्ययन के समय और ज्ञानार्जन के बीच एक आदर्श सहसंबंध होगा। अब सोचते हैं क्या यह एक मानव के साथ संभव है? जहाँ तक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का संबंध है, यह बहुत स्पष्ट है कि यह समस्यता अत्यंत आभक है। एक विद्यार्थी ज्ञान और अधिगम की समानता क्रमश: बाल्टी, पानी और भरने से नहीं हो सकता है। अधिगम बहुत से प्रभावों से प्रभावित होती है। अधिगम सतत एवं संचयी प्रक्रिया है जो स्वयं माँ के गर्भ से प्रारंभ हो जाता है। सभी मानव जाति सीखने की इच्छा एवं उत्सुकता के साथ प्राकृतिक अधिगमकर्ता है। अधिगम एक सार्वभौमिक मानवीय अनुभव है। प्रशिक्षण एवं अनुभव के परिणामस्वरूप अधिगम उस प्रक्रिया का सर्वाधिक प्रायिक विचारधारा है जो नये और परिवर्तित जवाबों का नेतृत्व करता है। अधिगम को उस प्रक्रिया के रूप में पारिभाषित करना अत्यधिक उपयुक्त होगा जिससे हम अपने जवाबों को नये व्यवहारों में संघटित करते हैं। यह सामान्य रूप से ज्ञात तथ्य है कि 'किसी को पढ़ाना संभव नहीं है, केवल एक ऐसी स्थिति का सृजन करना संभव है जहाँ अधिगम को सके।' यह विश्वास कि बच्चा 'एक खाली स्लेट' के रूप में विद्यालय आता है बहुत तर्कसंगत नहीं है। अधिगमकर्ता को सभी अधिगम स्थितियों पर केंद्रित करना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि ''आप एक बच्चे को पढ़ा नहीं सकते किंतु आप एक पौधा उगा सकते हैं। पौधा अपनी प्रकृति स्वयं विकसित करता है। बच्चा भी स्वयं को पढ़ाता है। किंतु आप उसे अपने तरीके से आगे बढ़ने में मदद कर सकते हैं। आप बाधाओं को हटा सकते हैं और ज्ञान

प्रारंभिक शिक्षकों हेतु व्यावसायिक विकास कार्यक्रम
(पी.डी.पी.ई.टी.)

पाठ्यक्रम-523
पाठ्यचर्या एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

खण्ड-1
अधिगम अनुभवों को समृद्ध करना

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
A-24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,
गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309
वैबसाइट : www.nios.ac.in

खण्ड–1
अधिगम अनुभवों को समृद्ध करना

इकाई–1: मूल्यांकन के लिए पाठ्यचर्या का विकास

इकाई–2: शिक्षण–शास्त्र के परिप्रेक्ष्यों में बदलाव

इकाई–3: समकालीन कक्षाकक्ष में अधिगम अनुभवों का आरेखण

इकाई–4: समावेशी कक्षाकक्ष का व्यवस्थापन

इकाई–5: शिक्षण–अधिगम का आकलन

इकाई–6: सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी द्वारा मध्यस्थ शिक्षण–अधिगम

खण्ड–2
समग्र जीवन को समृद्ध करना

इकाई 7 : समुदाय, एक अधिगम संसाधन के रूप में

इकाई 8 : एक शिक्षा शास्त्रीय संसाधन के रूप में कला

इकाई 9 : विद्यालयों में स्वास्थ्य और स्वच्छता को प्रोत्साहित करना (खेल–कूद और शारीरिक शिक्षा)

खण्ड-3
विद्यालयों में योग शिक्षा

इकाई 10 : विद्यालयी बच्चों के लिए योग की भूमिका एवं महत्व

इकाई 11: योगाभ्यास एवं विद्यालयी बच्चों के लिए इसका अनुप्रयोग

टिप्पणी

इकाई-1 : मूल्यांकन के लिए पाठ्यचर्या का विकास

संरचना

1.0 प्रस्तावना

1.1 अधिगम उद्देश्य

1.2 पाठ्यचर्या: अर्थ एवं संकल्पना

1.3 पाठ्यचर्या, कोर्स, पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तक

1.4 पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया

1.4.1 शैक्षिक आवश्यकताओं का आकलन

1.4.2 शैक्षिक उद्देश्यों का निर्माण

1.4.3 पठन-सामग्री का चयन

1.4.4 अधिगम अनुभवों का चुनाव एवं व्यवस्था

1.4.5 मूल्यांकन

1.5 मूल्यांकन

1.6 पाठ्यचर्या व पाठ्य-पुस्तकों का समलोचनात्मक परीक्षण

1.7 सारांश

1.8 प्रगति जाँच के उत्तर

1.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

1.0 प्रस्तावना

पाठ्यचर्या संपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया का एक बहुत महत्त्वपूर्ण अवयव है या आप कह सकते हैं कि विद्यालयी शिक्षण का दिल है। सारी शिक्षा व्यवस्था क्या? क्यों? और कैसे? की खोज के इर्द-गिर्द घूमती है। सरल शब्दों में आप ऐसे समझ सकते हैं–शिक्षा के उद्देश्य क्या हैं? और इन्हें कैसे प्राप्त किया जा सकता है? पाठ्यचर्या वह मूल बिंदु है जिसके इर्द-गिर्द विभिन्न कक्षा के क्रियाकलाप और सारे विद्यालय के कार्यक्रम विकसित होते हैं। ये शैक्षिक क्रियाकलाप पाठ्यचर्या अध्ययन से अच्छी तरह जुड़े हुए हैं। इसलिए यह इकाई आपको पाठ्यचर्या की संकल्पना और पाठ्यचर्या द्वारा लक्ष्य और उद्देश्य कैसे प्राप्त हो सकते हैं, को समझने में सहायता करेगी।

इस इकाई में आप पढ़ेंगे पाठ्यचर्या की संकल्पना और पाठ्यचर्या के विभिन्न अर्थ। पाठ्यचर्या से जुड़े हुए कई अतिरिक्त शब्द जैसे पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम और कोर्स तथा कैसे वे एक-दूसरे से भिन्न हैं। इसके अतिरिक्त इस इकाई में हम पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया (अवस्थाएं) समझेंगे और कैसे एक आप शिक्षक के नाते पाठ्यचर्या व पाठ्यपुस्तक की जांच करते हुए महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर चिंतन करेंगे।

1.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अंत में आप सक्षम होंगे–

- पाठ्यचर्या की संकल्पना को परिभाषित करने व समझाने में

टिप्पणी

इकाई-2 : शिक्षण-शास्त्र के परिप्रेक्ष्यों में बदलाव

संरचना

2.0 प्रस्तावना

2.1 अधिगम उद्देश्य

2.2 रचनात्मकतावाद

2.3 परंपरागत भारतीय उपागम और रचनात्मकतावाद

2.4 शिक्षा-विज्ञान में आये बदलाव

2.4.1 शिक्षण से अधिगम

2.4.2 निष्क्रिय से सक्रिय अधिगम

2.4.3 शिक्षार्थियों की पुस्तकों पर केन्द्रित रहना व उनका स्थानीय ज्ञान

2.4.4 विषय उन्मुखी ज्ञान से एकीकृत ज्ञान

2.4.5 प्रतियोगिता से सहभागिता व सहयोगिक अधिगम वातावरण

2.4.6 परीक्षा/ग्रेड निर्धारण से सतत आकलन

2.4.7 मूल कौशलों से जीवन कौशलों तक

2.5 आई.सी.टी. पर बल

2.6 सारांश

2.7 प्रगति की जांच के उत्तर

2.8 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.9 अन्त्य इकाई अभ्यास

2.0 प्रस्तावना

यदि आप कक्षा में अपेक्षित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का चिंतनशील विश्लेषण करें तो आप में से कुछ अपने भावों को सही शब्दों में प्रकट करने में परेशानी महसूस करेंगे परंतु आपमें से अधिकतर इस मुद्दे पर सहमत होंगे कि राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2005, के लागू होने के बाद शिक्षा-विज्ञान में मूल परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन न केवल राष्ट्रीय शिक्षा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) द्वारा प्रस्तावित पाठ्य-पुस्तकों और शिक्षण-अधिगम विधियों में प्रदर्शित होता है बल्कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) द्वारा शिक्षार्थियों की आकलन प्रक्रिया में भी दिखाई देता है। क्योंकि इन सबका आपस में गहरा रिश्ता है इसलिए किसी भी शिक्षा-विज्ञान में परिवर्तन का बदलाव अकेले में नहीं समझा जा सकता।

शिक्षा-विज्ञान की रूपावली में यह बदलाव पहले इसके पीछे निहित दर्शन को समझ कर, फिर इसका शिक्षा के विभिन्न आयामों जैसे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया और शिक्षार्थियों का मूल्यांकन, पर प्रभाव जानकर ही समझा जा सकता है।

इस इकाई में आपको शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के गंभीर पहलुओं से अवगत करवाया जाएगा जिन्होंने इसे रचनात्मकतावाद के प्रभाव में प्रभावित किया।

टिप्पणी

इकाई-3 : समकालीन कक्षा-कक्ष में अधिगम अनुभवों का आरेखण

संरचना

3.0 प्रस्तावना

3.1 अधिगम उद्देश्य

3.2 अवधारणा मात्रचित्रण नियोजन के एक उपकरण के रूप में

3.2.1 अवधारणा मानचित्रण

3.2.2 नियोजन हेतु अवधारणा मानचित्रण का एक उपकरण के रूप में उपयोग

3.2.3 अवधारणा मानचित्रण: नियोजन के एक उपकरण के रूप में

3.3 संसाधनों की पहचान और विकास

3.3.1 कक्षा-कक्ष के बाहर संसाधनों की पहचान

3.3.2 कक्षा-कक्ष के अंदर स्थान का उपयोग

3.3.3 संसाधनों के चयन, विकास और उपयोग में शिक्षक द्वारा ध्यान रखने योग्य बिंदु

3.4 कक्षा-कक्ष का वातावरण

3.5 अधिगम प्रतिफल

3.6 अधिगम अनुभवों की रूपरेखा बनाना

3.6.1 विविध अधिगम अनुभवों की रूपरेखा का नियोजन

3.6.1.1 परस्पर सीखना

3.6.2 सामुदायिक सहभागिता द्वारा सीखना

3.6.3 सर्वेक्षण द्वारा अधिगम

3.7 रचनात्मक अधिगम का 5E प्रतिरूप (मॉडल)

3.8 सारांश

3.9 प्रगति जाँच के उत्तर

3.10 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

3.0 प्रस्तावना

आज कक्षा-कक्ष की स्थिति कई प्रकार से बदल गई है। शिक्षा के विभिन्न आयामों में बढ़ते हुए शोध से प्राप्त परिणामों के कारण बच्चों के चिंतन और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की संरचना कैसे करने की आवश्यकता है, इस विषय पर आज बेहतर समझ बनी है। बच्चों और शिक्षकों के प्रति दृष्टिकोण में भी बदलाव आ गया है। आज बच्चों को सक्रिय शिक्षार्थी और ज्ञान के रचनाकर्ता और शिक्षक को इस प्रक्रिया में सहजकर्ता के रूप में देखा जाने लगा है। इसलिए शिक्षक का मुख्य उत्तरदायित्व अधिगम अनुभवों की रूपरेखा बनाता है, जो प्रत्येक शिक्षार्थी को उसकी ज्ञान संरचना में सहायता करे। इसलिए आधुनिक कक्षा-कक्षों में नियोजन को महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। अब विद्यार्थियों को निष्क्रय ज्ञान प्राप्त कर्ता नहीं समझा जाता, जिस पर मात्र शिक्षक की बातें हावी रहती हैं। यह शिक्षक केन्द्रित कक्षा-कक्ष का शिक्षार्थी-केन्द्रित कक्षा-कक्ष में परिवर्तन है। आज के कक्षा-कक्ष में शिक्षक विद्यार्थी को अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय प्रतिभागी के रूप में देखता है, क्योंकि वह सार्थकता की खोज अपने पूर्वज्ञान को नए विचारों और सूचनाओं से जोड़कर करने का प्रयास करती/ता है।

यह इकाई शिक्षकों को उपयुक्त प्रविधियों से सज्जित करने पर केन्द्रित है, जो शिक्षकों को कक्षा-कक्ष में अधिगम को बेहतर तरीके से नियोजित करने में सहायक होगा। इससे कक्षा-कक्ष में प्रत्येक बच्चे को शिक्षक द्वारा प्रदत्त अनुभवों से

टिप्पणी

इकाई-4 : समावेशी कक्षा-कक्ष का व्यवस्थापन

संरचना

4.0 प्रस्तावना

4.1 अधिगम उद्देश्य

4.2 समावेशी शिक्षा की संकल्पना

4.3 समावेशी कक्षा-कक्ष

4.4 समावेशी कक्षा-कक्ष की जरूरतों को पहचानना

4.5 अधिगम अनुभवों को डिजाइन करना, UDL (अधिगम के लिए सार्वभौमिक डिजाइन)

4.6 समावेशी व्यवस्था में आकलन

4.7 सारांश

4.8 प्रगति जाँच के उत्तर

4.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.10 शब्दावली

4.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

4.0 प्रस्तावना

श्रीमती श्वेता कक्षा II से कक्षा V तक के विद्यार्थियों को पिछले 7 वर्षों से पढ़ा रही हैं। उन्हें उनके अधिकांश विद्यार्थियों द्वारा प्यार किया जाता है और वह विद्यालय में एक लोकप्रिय शिक्षक है। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने उन्हें पिछले वर्ष सर्वोत्तम अध्यापक के पुरस्कार से पुरस्कृत किया। उनकी कक्षा से कुछ नये दाखिला हुए हैं। अन्यों में से एक लड़की प्रीति सुनने में सक्षम नहीं है एक अन्य लड़का राहुल कक्षा में अशान्ति फैलाता है–वह एक स्थान पर बैठ नहीं सकता और लगातार कक्षा में घूमता रहता है। श्रीमती श्वेता राहुल के विघटनकारी व्यवहार को संभालने में सक्षक नहीं हैं और वह प्रीति को कक्षा में जोड़ने में सक्षम नहीं है।

हमारे चारों ओर बहुत सी ऐसी घटनायें हैं, जब हम किसी द्वारा ऊपर वर्णित परिस्थिति को देखते हैं तो पाते हैं कि श्रीमती श्वेता अपवाद नहीं है। जब एक कक्षा-कक्ष में विशेष जरूरतों वाले बच्चे होते हैं तो हममें से अधिकांश ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं। एक समावेशी कक्षा-कक्ष को व्यवस्थित करने की रणनीतियों और बच्चों को विशेष जरूरतों के ज्ञान की पृष्ठभूमि वाले कुछ शिक्षक ऐसी कक्षा-कक्षों को अच्छी तरह संभाल सकते है। यह इकाई समावेशी कक्षा-कक्ष की संकल्पना से आपको परिचित करायेगा और आपकी कक्षा-कक्ष में ऐसे बच्चों को संभालने के लिए आत्मविश्वास प्राप्त करने में आपकी मदद करेगा।

4.1 अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के पश्चात आप सक्षम होंगे:

- समावेशी शिक्षा की संकल्पना को समझने में
- एक समावेशी कक्षा-कक्ष बनाने में

टिप्पणी

इकाई-5 : शिक्षण-अधिगम का आकलन

संरचना

5.0 प्रस्तावना

5.1 अधिगम उद्देश्य

5.2 शिक्षण-अधिगम के आकलन की अवधारणा

5.2.1 अधिगम के लिए, अधिगम का और अधिगम में आकलन के बीच विभिन्नता

5.3 अधिगम प्रक्रिया के अंगभूत अंग के रूप में आकलन

5.4 परंपरागत भारतीय उपागम बनाम आधुनिक उपागम

5.4.1 आधुनिक आकलन परंपरागत आकलन को पूर्ण करता है

5.4.2 परंपरागत एवं आधुनिक आकलन के लक्षणों को पारिभाषित करना

5.4.3 आधुनिक आकलन के लिए वैकल्पिक नाम

5.5 सतत एवं समग्र मूल्यांकन

5.5.1 परिणाम परिणाम और प्रभाव

5.6 सतत एवं समग्र मूल्यांकन का क्रियान्वयन

5.6.1 पोर्टफोलियो

5.6.2 रूब्रिक्स (Rubrics)

5.7 सारांश

5.8 प्रगति जाँच के उत्तर

5.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

5.0 प्रस्तावना

इस इकाई में अधिगम का, अधिगम के लिए आकलन और अधिगम में, अधिगम का आकलन के बीच अंतर की व्याख्या करके आकलन की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आकलन के महत्व की जरूरत को उपयुक्त आरेख के द्वारा निरूपित किया गया है। शिक्षण के परंपरागत एवं आधुनिक उपागम के अवधारणाओं पर अच्छी तरह विचार विमर्श किया गया है और उनके अंतरो को सारणी के रूप में दिखाया गया हो सतत एवं समग्र मूल्यांकन की अवधारणा को संक्षेप में दिया गया है और विद्यालयी विषयों जैसे विज्ञान और सामाजिक विज्ञान से उदाहरणों को देकर सक्रिय अधिगम के आकलन के लिए उपकरणों एवं तकनीकों के उपयोग द्वारा सतत एवं समग्र मूल्यांकन की अवधारणा पर पूर्णतया चर्चा किया गया है। अतत: इकाई शिक्षण-अधिगम के आकलन में पोर्टफोलियो एवं रूब्रिक्स और उनके अनुप्रयोग पर केन्द्रित है।

5.1 अधिगम उद्‌देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप समक्ष सकेंगे:-

- शिक्षण-अधिगम में आकलन के अर्थ को समझने में।
- अधिगम के लिए आकलन और अधिगम में आकलन के बीच विभिन्नता करने में।

टिप्पणी

इकाई-6 : सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी द्वारा मध्यस्थ शिक्षण-अधिगम

संरचना

6.0 प्रस्तावना

6.1 अधिगम उद्देश्य

6.2 उपयुक्त सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का चयन

6.3 शिक्षण-अधिगम एवं नियोजन के लिए इंटरनेट प्रौद्योगिकी का उपयोग करना

6.4 अधिगम का सृजन एवं साझा करने में मोबाइल का उपयोग

6.4.1 गतिशील अधिगम: परिभाषा

6.4.2 अधिगम सृजित करने के लिए मोबाइल

6.4.3 अधिगम साझा करने के लिए मोबाइल

6.5 विद्यालय प्रबंधन के लिए ICT

6.5.1 ICT के उपयोग को व्यवस्थित करने की रणनीतियाँ

6.6 सारांश

6.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.8 शब्दावली

6.9 अन्त्य इकाई अभ्यास

6.0 प्रस्तावना

परंपरागत रूप से, प्रौद्योगिकी का उपयोग विद्यार्थी को निर्देशों को संप्रेषित करने में हुआ है जो ध्यानपूर्वक निर्देशों को समझेंगे और उन्हें सीखेंगे। यह माना भी गया है कि लोग टेलीविजन या वृत्तचित्रों को देखकर प्रौद्योगिकी से सीखते हैं जो एक कक्षा में एक शिक्षक के नियोजित निर्देश या श्रवण के प्रति प्रतिक्रिया के लिए बनाये गये हैं। किंतु Jonassen (1992) तर्क देते हैं कि तकनीक प्रत्यक्षत: अधिगम की मध्यस्थता नहीं करता है। इसके बजाय अधिगम की मध्यस्थता चिंतन द्वारा किया जाता है और चिंतन आरंभ होता है अधिगम गतिविधियों से तथा अधिगम गतिविधियाँ मध्यस्थ होती है प्रौद्योगिकी के साथ-साथ निर्देशात्मक पहलों से।

ICT द्वारा शिक्षण और अधिगम का अर्थ है सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एक प्लेटफार्म प्रदान करता है जहाँ विभिन्न साक्षरतायें उपकरणों एवं स्थानों से संबद्ध होती है जिनमें ये शिक्षण एवं अधिगम वातावरण में संप्रेषित होती है। (वासुदेवन, 2010)

ICT अधिगम प्रक्रिया की परंपरागत संकल्पना को बदल सकता है और ICT के घटकों को शिक्षा कार्यक्रम में इस तरह से एकीकृत किया जाना चाहिए कि और औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों व्यवस्थाओं में सभी स्तरों पर सामर्थ्य एवं शिक्षा की प्रभावशीलता और नई मांगों का सामना करने में शिक्षण को समर्थ होना चाहिए। ICT न केवल विद्यार्थी के अधिगम अनुभव को बढ़ाता है बल्कि संसार के कार्यों में प्रभावी ढंग से भागीदारी के लिए अनिवार्य कौशल को विकसित करने में उनकी मदद करता है। ICT का ज्ञान और ICT का उपयोग करने का कौशल आज के शिक्षक के लिए अधिक महत्त्व प्राप्त कर चुका है। ICT द्वारा विकसित नया अधिगम वातावरण अंत:क्रिया वातावरण कहलाता है।

ICT अधिगम के पुराने परंपरागत प्रतिमान को अधिगम के नये प्रतिमान में स्थानांतरित करने पर केंद्रित करता है। अत: हमें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में नये प्रतिमान और प्रौद्योगिकी को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को

इकाई 7 : समुदाय, एक अधिगम संसाधन के रूप में

संरचना

7.0 प्रस्तावना

7.1 अधिगम उद्देश्य

7.2 बालक पर समुदाय के अधिगम प्रभाव

7.3 संसाधन के रूप में समुदाय

7.4 समुदाय के अंग

7.5 सामुदायिक संसाधनों का अधिगम में महत्व

7.6 परिवार एवं मित्र – एक अधिगम स्रोत

7.6.1 परिवार

7.6.2 मित्र

7.7 सामुदायिक सदस्य एक अधिगम स्रोत

7.8 अन्य सामुदायिक स्रोत/संसाधन

7.9 धर्म तथा धार्मिक कार्यक्रम

7.10 सांस्कृतिक कार्यक्रम

7.11 सारांश

7.12 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

7.13 अन्त्य इकाई अभ्यास

7.0 प्रस्तावना

हमें ज्ञान एवं शिक्षा मूलतः दो स्रोतों से प्राप्त होता हैं– अनौपचारिक व औपचारिक। अनौपचारिक शिक्षा हमें घर, समाज एवं समुदाय, मित्रों आदि स्रोतों एवं संसाधन से मिलती है और इसके लिये विद्यालय जाने की आवश्यकता नहीं है। दादा–दादी और नाना – नानी की कहानियों में, बड़ों की बातचीत में, संस्कृति के अनुसरण एवं अनुकरण में, विविध त्योहारों में, संस्कारों में, मित्रों के साथ, भ्रमण के समय, यात्राओं में, न जाने कितना कुछ सीखते हैं हम सब। हिसाब लगाने बैठे तो लगेगा कि जितना भी ज्ञान हमारे पास है, वह अनौपचारिक शिक्षा की ही देन है। दूसरे के प्रति आदर भाव प्रदर्शित करना, कपड़े पहनना, घर का कार्य कर लेना आदि न जाने कितने ऐसे कार्य हैं जो हम विद्यालय जाकर नहीं सीखते हैं, समाज में अपने आस पास देखते हैं और सीखते हैं। भाषा का प्राथमिक ज्ञान अनौपचारिक ही होता है, बच्चा देखता रहता है, सीखता रहता है। कहावत भी है कि भाषा तो बच्चा माँ के गर्भ से ही सीखना आरंभ कर देता है। जिन परिवारों में कोई एक व्यवसाय कई पीढ़ियों से किया जा रहा है, उससे संबद्ध ज्ञान अनौपचारिक रूप से परिवार में प्रचुर मात्रा में आ जाता है। व्यापारी का पुत्र व्यापारी, राजनेता का पुत्र राजनेता, किसान का पुत्र किसान, यदि कोई अपना पैतृक व्यवसाय अपनाना चाहे तो उसे न जाने कितना ज्ञान अनौपचारिक रूप से मिल जाता है।

टिप्पणी

इकाई 8: एक शिक्षा शास्त्रीय संसाधन के रूप में कला

संरचना

8.0 प्रस्तावना

8.1 अधिगम उद्देश्य

8.2 कला तथा सौंदर्यबोध

8.2.1 प्राथमिक स्तर पर कला और सौन्दर्यबोध शिक्षण के उद्देश्य

8.2.2 उच्च प्राथमिक स्तर पर कला और सौन्दर्यबोध शिक्षण के उद्देश्य

8.3 कला और सौन्दर्यबोध का प्रारंभिक कक्षा के विद्यार्थियों के विकास में महत्व

8.4 कला और सौंदर्यबोध हेतु विविध कला रूपों का प्रयोग

8.4.1 नृत्य

8.4.2 लोकगीत

8.4.3 संगीत

8.4.4 रंगशाला/नाटक

8.4.5 कठपुतली का खेल

8.5 बच्चों की कला की सराहना करना

8.6 कला द्वारा सृजनात्मक भावाभिव्यक्ति का विकास

8.7 कलात्मक भावाभिव्यक्तियों का मूल्यांकन

8.7.1 प्राथमिक स्तर पर कला शिक्षा का मूल्यांकन

8.7.2 उच्च प्राथमिक स्तर पर कला शिक्षा का मूल्यांकन

8.8 सारांश

8.9 प्रगति जाँच के उत्तर

8.10 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

8.0 प्रस्तावना

प्राचीन काल से अब तक शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। अन्य सभी उद्देश्य इसी एक उद्देश्य में अन्तर्निहित हैं। परन्तु समस्या यह है कि वर्तमान समय में शिक्षा अपने मार्ग से भटक गयी है और यह मात्र पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित हो कर रह गयी है जिसका लक्ष्य मात्र परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना और रोजगार प्राप्त करना हो गया है। ऐसा नहीं है कि शिक्षा का उद्देश्य रोजगार की प्राप्ति नहीं होना चाहिए, परन्तु यही एकमात्र लक्ष्य होना शिक्षा का उसके वास्तविक स्वरुप का खोना कहा जा सकता है। हम सभी जानते हैं कि शिक्षा ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक तीनों पक्ष का विकास करती है परन्तु वर्तमान समय में सभी विद्यालयों में जिस प्रकार की शिक्षा दी जा रही है वह ज्ञानात्मक और क्रियात्मक पक्ष का विकास तो करती है पर इस प्रकार की शिक्षा से बालक का भावात्मक पक्ष अछूता रह जा रहा है और समाज में उत्पन्न हो रही नित

टिप्पणी

इकाई–9: विद्यालयों में स्वास्थ्य और स्वच्छता को प्रोत्साहित करना (खेल–कूद और शारीरिक शिक्षा)

सरंचना

9.0 प्रस्तावना

9.1 अधिगम उद्देश्य

9.2 समग्र स्वास्थ्य तथा कल्याण का संप्रत्यय

9.3 बच्चों के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की आवश्यकताएं

9.4 स्वस्थ आदतों का विकास

9.5 शारीरिक शिक्षा

9.6 बच्चों के स्वास्थ्य तथा विकास में योग, खेल कूद तथा क्रीडा की भूमिका

9.7 सारांश

9.8 प्रगति जाँच के उत्तर

9.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

9.0 प्रस्तावना

विद्यालय में आयोजित सभी क्रियाओं का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना होता हैं। जिसके अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक, अध्यात्मिक इत्यादि सभी प्रकार के विकास आते हैं। ये सभी विकास बच्चों के स्वास्थ्य से सम्बंधित होते हैं। एक स्वस्थ शरीर ही वह साधन हैं जिसके माध्यम से जीवन के सभी प्राप्तव्य अर्जित किये जा सकते हैं। अतः स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सम्बंधित जानकारियाँ बच्चों की शिक्षा का अभिन्न अंग होना चाहिये। स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सम्बन्धी जानकारियों का क्रियान्वयन जीवन के आधारभूत मूल्यों में से एक महत्वपूर्ण मूल्य हैं। इस मूल्य का सम्यक विकास करना शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य हैं। वर्तमान इकाई में आप समग्र स्वास्थ्य तथा कल्याण के संप्रत्यय का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे तथा साथ ही बच्चों के स्वास्थ्य और स्वच्छता की जरूरतों के बारें में भी जानेंगे। इसके बाद आप जानेंगे की बच्चों में स्वस्थ आदतों का विकास कैसे किया जाय। तत्पश्चात बच्चों के स्वास्थ्य तथा विकास में योग, खेल कूद तथा क्रीडा की भूमिका के बारें में अध्ययन करेंगे।

9.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप समग्र स्वास्थ्य तथा कल्याण के संप्रत्यय के बारे में बता सकेंगे:

- समग्र स्वास्थ्य की परिभाषा बता सकेंगे।
- बच्चों के स्वास्थ्य और स्वच्छता की जरूरतों को बता पाने में सक्षम होंगे।

टिप्पणी

इकाई-10 : विद्यालयी बच्चों के लिए योग की भूमिका एवं महत्व

संरचना

10.0 भूमिका

10.1 अधिगम उद्देश्य

10.2 इतिहास

10.3 समग्र स्वास्थ्य की यौगिक अवधारणा

10.3.1 समग्र स्वास्थ्य

10.3.2 स्वास्थ्य के लिए पतंजलि योग या अष्टांग योग

10.4 योग की भूमिका

10.4.1 शारीरिक पक्ष

10.4.2 संवेगात्मक एवं व्यावहरात्मक पक्ष

10.4.3 मानसिक पक्ष

10.4.4 सृजनात्मक पक्ष एवं विकास की संभावना

10.5 विद्यालयों में योग का महत्त्व

10.5.1 आन्तरिक संज्ञता

10.5.2 अनुशासन

10.5.3 मानवीय गुण विकास

10.5.4 निष्क्रिय जीवन शैली की संसाधिता

10.6 सारांश

10.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

10.0 भूमिका

योग व्यक्तित्व के शारीरिक, मनोप्रेरणात्मक व मानसिक विकास में सहायक है। योगाभ्यास व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व वर्ग संतुलन स्थापित करता है। NCF 2005 ने 'समग्र विकास' पर बल देते हुए 'योग' को स्वास्थ्य का अंतरंग भाग स्वीकार किया। प्राथमिक स्तर पर 'योग' का समावेश करने के लिए आवश्यक है कि अध्यापक को 'योग' का महत्त्व व बालक के जीवन में इस की भूमिका स्पष्ट हो। योग बाल जीवन के तीन प्रमुख पक्षों/आयामों को प्रभावित करता हैं, जो हैं शारीरिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक संतुलन और शैक्षणिक निष्पादन। 'योग' के समावेश का चरम लक्ष्य बच्चों को सिखाना व दिशा देना है कि वे किस प्रकार सक्रिय, सजग, सशक्त रहें और जीवन में, जीवन के लिए हितकारी विकल्पों का चयन करें।

10.1 अधिगम उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप समझ सकेंगे–

- 'योग' से अभिप्राय, योग का इतिहास व विकास।
- योग की स्वास्थ्य अवधारणा एवं इसके निर्वहन के लिए यौगिक तकनीक।
- पतंजलि योग का अष्टांग योग एवं संतुलित जीवन की स्थिति।

टिप्पणी

इकाई-11 : योगाभ्यास एवं विद्यालयी बच्चों के लिए इसका अनुप्रयोग

संरचना

11.0 प्रस्तावना

11.1 अधिगम उद्देश्य

11.2 एक परंपरागत तरीके से 8 से 14 आयु वर्ग के बच्चों के लिए योगाभ्यास

11.3 छोटे बच्चों के लिए एक मनोरंजन के रूप में योगा

11.3.1 योगा जू (जानवरों की भंगिमा)

11.3.2 छोटे बच्चों के लिए योगा के खेल (6 से 10 आयु वर्ग)

11.4 योगा की तकनीक का कक्षाकक्ष अनुप्रयोग

11.4.1 रीढ़ को सीधा रखने और पास्टूयरल मांशपेशियों को शिथिल करने के लिए योगाभ्यास श्वसन जागरूकता, कलाई घूर्णन, कोहनी मोड़ना, कंधों का घूर्णन, गोमुखासन

11.4.2 बेहतर एकाग्रता और अधिगम के लिए कक्षा को प्रारंभ एवं समाप्त करने के योगिक तरीके

11.5 अभ्यास के लिए जरूरी नियम

11.6 सारांश

11.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

11.0 प्रस्तावना

मनुष्य में पहले से स्थित पूर्णता: को प्रकट करने की एक प्रक्रिया है शिक्षा जो बच्चे के समग्र विकास का एक अंग है। इसे बढ़ते बच्चे को एक सुंदर फुल के रूप में खिलने में मदद करना चाहिए। बच्चे का एक मनुष्य के रूप में इस पुष्पण के लिए हमें संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की जरूरत है। हम अंतिम भाग में पढ़ चुके हैं कि योगा द्वारा एक सकल मूल्य प्रणाली प्रदान किया गया है। इन कारणों से शिक्षा में योग, योग की तकनीकों का व्यस्थित परिचय अनिवार्य हो जाता है। एक सही तरीका निश्चित रूप से हमारे समुदाय की खो चुकी मूल्य: प्रणाली की पुन: संरचना करने में एक लंबी दूरी तय कर सकता है। शिक्षा प्रणाली में योग तकनीक को प्रवर्तित करने के लिए सभी शिक्षक को अभ्यासों के सभी विवरणों प्रारंभिक स्थिति, श्वास समक्रमण, अपथ्य-निर्देशनों, सभी पूर्ण एवं सूक्ष्म प्रभावों के बारे में जानना चाहिए। इसकी सार्थकता एवं इसे लागू करने के विभिन्न तरीकों को भी उन्हें जानना चाहिए।

11.1 अधिगम उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप समझ सकेंगे-

- बच्चों के लिए योग की महत्त्वपूर्ण तकनीक की व्याख्या करने में।
- योग को शिक्षा प्रणाली के एक अंग के रूप में प्रवर्तित करने में।
- विद्यालय वातावरण के उपयुक्त विभिन्न प्रकार के योग कार्यक्रम आयोजित करने में।
- विद्यालयों में योग तकनीक के परिष्कृत अनुप्रयोग करने में।
- योग के सुझाव या अभ्यास नोट देने में।

प्रारंभिक शिक्षकों हेतु व्यावसायिक विकास कार्यक्रम
(पी.डी.पी.ई.टी.)

पाठ्यक्रम-524
विद्यालयी विषयों का शिक्षण-शास्त्र

खण्ड-1
भाषा का शिक्षण-शास्त्र

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
A-24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,
गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309
वैबसाइट : www.nios.ac.in

खण्ड–1
भाषा का शिक्षण–शास्त्र

इकाई–1: भाषा एवं संप्रेषण, शैशवावस्था एवं बचपन के दौरान उनका विकास और भाषा कौशल

इकाई–2: भाषा के शिक्षण–अधिगम में उपागम, विधियाँ एवं तकनीकें

इकाई–3: संसाधान जो भाषा शिक्षण–अधिगम के अनुपूरक हैं

इकाई–4: भाषा अधिगम का आकलन

खण्ड–2
पर्यावरण विज्ञान का शिक्षण–शास्त्र

इकाई–5: अधिगम के प्रारंभिक स्तरों पर पर्यावरण का महत्त्व, प्रारंभिक स्तर पर पर्यावरण विज्ञान का उद्देश्य एवं क्षेत्र

इकाई–6: पर्यावरण विज्ञान में शिक्षण–अधिगम

इकाई–7: पर्यावरण विज्ञान के अधिगम के अनुपूरक संसाधन

इकाई–8: पर्यावरण विज्ञान में अधिगम का आकलन करने हेतु उपकरण एवं तकनीकें

खण्ड-3
गणित का शिक्षण-शास्त्र

इकाई-9: गणित शिक्षण के विविध पहलू

इकाई-10: गणित की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

इकाई-11: शिक्षण अधिगम सामग्री तथा गणित अधिगम में अन्य संसाधन

इकाई-12: गणित अधिगम में आकलन

खण्ड–4
विज्ञान का शिक्षण शास्त्र

इकाई–13: विज्ञान की प्रकृति

इकाई–14: विज्ञान शिक्षण के विभिन्न उपागम एवं विधियाँ

इकाई–15: पाठ योजना एवं कम लागत या बिना लागत वाले शिक्षण संसाधन

इकाई–16: विज्ञान के अधिगम का आकलन

खण्ड - 5
सामाजिक अध्ययन का शिक्षण-शास्त्र

इकाई - 17 : प्रारंभिक विद्यालयी पाठ्यचर्या में सामाजिक अध्ययन की प्रकृति

इकाई - 18 : सामाजिक अध्ययन शिक्षण के अनुपूरक संसाधन

इकाई - 19 : सामाजिक अध्ययन की शिक्षण अधिगम रणनीतियाँ

इकाई - 20 : सामाजिक अध्ययन का आकलन

टिप्पणी

इकाई 1 : भाषा एवं संप्रेषण, शैशवावस्था एवं बचपन के दौरान उनका विकास और भाषा कौशल

संरचना

1.0 प्रस्तावना

1.1 अधिगम उद्‌देश्य

1.2 भाषा का अर्थ

1.2.1 भाषा का महत्व एवं दृष्टिकोण

1.2.2 भाषा व व्याकरण

1.2.2.1 ध्वनि संरचना

1.2.2.2 शब्द संरचना

1.2.2.3 वाक्य संरचना

1.2.2.4 संवाद संरचना

1.3 भाषा और संप्रेषण : शैशव और बाल्यकाल में भाषा कौशलों का विकास

1.3.1 भाषा विकास के चरण/सोपान

1.4 भाषा कौशल

1.4.1 श्रवण कौशल

1.4.2 बोलना माने क्या?

1.4.2.1 नाटक द्वारा भाषाई विकास

1.4.3 पठन कौशल

1.4.4 लेखन कौशल

1.5 सारांश

1.6 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.7 अन्त्य इकाई अभ्यास

1.0 प्रस्तावना

इस इकाई में हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि भाषा क्या है। भाषा की क्या परिभाषा होनी चाहिए, क्या परिकल्पना होनी चाहिए। व्याकरण के दृष्टिकोण से भाषा का स्वरूप कैसा है? ध्वनि, शब्द, वाक्य एवं संवाद के धरातल पर उसकी संरचना कैसी है? हम भाषा के मनोवैज्ञानिक व सामाजिक पक्षों के बारे में भी चर्चा करेंगे। बहुत ही संक्षेप में हम यह समझने की भी कोशिश करेंगे कि किसी भाषा में प्रवीण होने का क्या मतलब है और भाषा के मानकीकरण की क्या प्रक्रिया होती है। भाषा और साहित्य के संबंध के बारे में भी कुछ चर्चा करेंगे।

1.1 अधिगम उद्देश्य

यह इकाई विशेष रूप से भाषा की प्रकति एवं संरचना के बारे में है। हमें उम्मीद है कि इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- भाषा के अर्थ एवं उसके महत्व से अवगत हो पाएँगे;

टिप्पणी

bdkbZ 2 % Hkk"kk dk f'k{k.k&vf/kxe esa mikxe] ikB ;kstuk] fof/k;ka ,oa rduhdsa

Ijpuk

2.0 प्रस्तावना

2.1 अधिगम उद्देश्य

2.2 शिक्षण में तरीके और तकनीक दृष्टिकोण

2.2.1 संरचनात्मक उपागम

2.2.2 संप्रेषणात्मक उपागम

2.2.3 रचनात्मक उपागम

2.2.4 व्याकरण अनुवाद विधि

2.2.5 प्रत्यक्ष विधि

2.2.6 श्रव्यभाषण विधि

2.3 योजना की जरूरत

2.4 पाठ/शिक्षण योजना क्या है?

2.5 पाठ/शिक्षण योजना के घटक

2.5.1 क्या पढ़ाना/सिखाना है?

2.5.2 किसको पढ़ाना/सिखाना है?

2.5.3 जो पढ़ाया गया, उसकी जाँच करना

2.5.4 कैसे पढ़ाएँगे/सिखाएँगे?

2.6 कितनी योजना बनाएँ?

2.7 मॉडल शिक्षण योजना–शिक्षण योजनाओं के उदाहरण

2.7.1 तूलिका की कक्षा

2.7.2 सतपुड़ा के घने जंगल

2.7.3 वर्ण सिखाना

2.7.4 राधा की कक्षा

2.7.5 कक्षा में कहानी का उपयोग

2.8 पोस्टर एवं विज्ञापन

2.9 पाठ–योजना कैसे बनाएँ?

2.10 सारांश

2.11 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.12 अन्त्य इकाई अभ्यास

2.0 iLrkouk

जब हम बच्चों को पढ़ाने के बारे में सोचते हैं, तो इसके कई तरीके हो सकते हैं। इनमें गतिविधियों के माध्यम से बोर्ड पर समझाना, बच्चों से पढ़वाना और पढ़े हुए का सारांश प्रस्तुत करवाना, सवाल हल करने को देना, सर्वे करवाना आदि शामिल है। इनमें अलग–अलग तरह

टिप्पणी

2.5 ikB@f'k{k.k ;kstuk d ?kVd

रघु ने यह सूची बनाई कि पाठ–योजना हमें बताती है–

1. पाठ में हम क्या पढ़ाएँगे?
2. हमें किसे पढ़ाना है?
3 हम कैसे पढ़ाएँगे?
4. पढ़ाने में मदद के लिए क्या सामग्री चाहिए?
5. हम कैसे जानेंगे कि जो हमने पढ़ाया वो बच्चे समझ गए?
6. अगर योजनानुसार काम नहीं होता तो हम क्या तैयारी करेंगे?

आप कौनसे बिन्दुओं से सहमत हैं? इस सूची में कोई बिन्दु छूट गया है जिसे आप जोड़ना चाहेंगे?

यह एक मोटा अनुमान है कि हमारी पाठ योजना किस बारे में है, इसे थोड़ा और नज़दीक से देखते हैं।

2.5.1 D;k i<kuk@fl[kkuk g\

यह क्षेत्र पाठ्यचर्या निर्माताओं द्वारा तय किया जाता है और पाठ्यपुस्तक के रूप में हमारे सामने आता है। पाठ्यपुस्तक लिखते समय, पाठ का चयन बच्चे के सीखने के स्तर और क्रम को ध्यान में रखते हुए किया जाता है कि बच्चा अवधारणा को कैसे समझता है। पाठ सरल से कठिन के क्रम में रखे जाते हैं लेकिन एक शिक्षक के रूप में हम तय कर सकते हैं कि कौनसा पाठ पढ़ाना है। पाठ योजना हमें ये बताने में समर्थ होनी चाहिए कि आप क्या पढ़ाना चाहती हैं? और क्या आपकी कक्षा की परिस्थितियाँ आपको ये अनुमति देंगी? इसके लिए हमें यह पता करना होगा कि बच्चों ने अब तक क्या सीखा है, पिछली अन्तःक्रिया में उनके साथ क्या बातचीत की गई। इसके लिए हमें पाठ में शामिल अवधारणाओं को समझने, उन्हें क्रम से जमाने और अपने अगले कदम को चुनने में सक्षम होने की जरूरत है। साथ ही यह भी समझना होगा कि अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पाठ का कौनसा हिस्सा चुनें।

2.5.2 fdl dk i<kuk@fl[kkuk g\

पाठ–योजना बनाने के लिए हमें बच्चे की प्रकृति को समझने की जरूरत है। यह जानना कि कक्षा में आने से पहले बच्चा क्या जानता है और उसने यह कैसे सीखा है। यह हमें बच्चे की सीखने की क्षमता और योग्यता को समझने और अपनी पाठ योजना बच्चे के इर्द–गिर्द बुनने में मदद करता है। साथ ही हमें बच्चों के बैठने की व्यवस्था सहित स्कूल एवं कक्षा की पृष्ठभूमि को भी जानना जरूरी है।

इसके अलावा हमें कक्षा में बच्चों की संख्या व उनकी उम्र भी पता होनी चाहिए। उम्र की जानकारी हमें योजना, गतिविधि बनाने एवं इनकी क्रियान्विति के तरीके को व्यवस्थित करने में मदद करती है।

दूसरा, हमें इसकी भी थोड़ी बहुत समझ होनी चाहिए कि बच्चा विषय के बारे में क्या जानता है। बच्चे के विषय–ज्ञान को, उसकी सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, उनका खाना, कपड़ों, त्योहारों तथा घर में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा आदि को देखकर पहचाना जा सकता है। साथ ही यह भी पहचानना होता है कि हम अपनी पाठ–योजना में बच्चे की संस्कृति को कैसे शामिल कर सकते हैं।

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में भाषा की बहुत अहम भूमिका है, खासकर प्राथमिक कक्षाओं में बच्चे की भाषा का कक्षा में उपयोग उनके संकोच को खत्म करने, उन्हें अतिरिक्त ज्ञान देने और कक्षा गतिविधियों में उनकी भागीदारी को अवसर और आजादी देने में मदद करता है।

टिप्पणी

bdkbl 4 % भाषा अधिगम का आकलन

Ijpuk

4.0 प्रस्तावना

4.1 अधिगम उद्देश्य

4.2 वर्तमान में चल रही आकलन की प्रक्रिया

4.3 आकलन और मूल्यांकन

4.3.1 आकलन क्यों?

4.4 भाषा में आकलन के बिन्दु

4.4.1 सुनना और बोलना

4.4.2 पढ़कर समझना

4.4.3 लिखना

4.4.4 अभिव्यक्ति

4.5 भाषा में आकलन के तरीके

4.5.1 मौखिक परीक्षण

4.5.2 अवलोकन

4.5.3 लिखित परीक्षण

4.6 श्रवण मूल्यांकन

4.6.1 बोलना, वाचन का मूल्यांकन

4.6.2 पठन मूल्यांकन

4.6.3 लेखन मूल्यांकन

4.7 भाषा में गद्य, पद्य और नाटक के लिए आकलन हेतु गतिविधियाँ

4.7.1 गद्य

4.7.2 पद्य

4.7.3 नाटक

4.8 सारांश

4.9 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

4·0 iLrkouk

इस इकाई में हम यह समझ बनाने की कोशिश करेंगे कि भाषा की कक्षा में आकलन किस तरह से किया जाता है? आखिर आकलन है क्या? आकलन में क्या–क्या शामिल होता है आदि। भाषा के संदर्भ में आकलन करते समय किन–किन बिन्दुओं पर ज़ोर देना चाहिए इस पर चर्चा करेंगे। हम यह भी देखेंगे की आकलन कि जो प्रचलित प्रक्रिया है वह कैसी है? क्या वह आकलन के उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम है? प्रचलित प्रक्रिया के अलावा आकलन के और कौन–कौनसे तरीके हो सकते हैं, जिसके द्वारा आकलन के कारण बच्चे में सीखने के प्रति अरुचि पैदा न हो। बल्कि आकलन इस तरह से हो कि बच्चे के आत्मविश्वास और क्षमताओं को बढ़ावा मिले। आकलन

इकाई-5: अधिगम के प्रारंभिक स्तरों पर पर्यावरण का महत्त्व, प्रारंभिक स्तर पर पर्यावरण विज्ञान का उद्देश्य एवं क्षेत्र

संरचना

5.0 प्रस्तावना

5.1 अधिगम उद्देश्य

5.2 पर्यावरण को समझना

5.3 बाल विकास में पर्यावरण का महत्त्व

5.4 पर्यावरण को बच्चे के साथ जोड़ना

5.5 अधिगम हेतु पर्यावरण के महत्व को पहचानना

5.6 प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन क्यों?

5.7 एन.सी.एफ. 2005 के विशेष संदर्भ में पर्यावरण शिक्षा के शिक्षण-अधिगम के उद्देश्य

5.8 पर्यावरण अध्ययन में निहित मूल्य

5.8.1 हमारे पर्यावरण का मूल्य समझना: भारतीय धरोहर

5.9 एन.सी.एफ. 2005 के विशेष संदर्भ में प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षण अधिगम का क्षेत्र

5.10 सारांश

5.11 प्रगति जांच के उत्तर

5.12 संदर्भ ग्रंथ / कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.13 अन्त्य इकाई अभ्यास

5.0 प्रस्तावना

प्रारम्भिक पाठ्यक्रमों के दौरान शायद आपको यह अच्छी तरह से स्पष्ट हो गया होगा कि आप कौन सा विषय पढ़ाएगें। उदाहरण के लिए जब आप 'गणित', 'हिन्दी' या 'अंग्रेजी' शब्द सुनते हैं तो आपको लगभग पता होता है कि इस विषय की विषयवस्तु एवं क्षेत्र क्या होगा।

जब आप पर्यावरण अध्ययन का पाठ्यक्रम पढ़ना-पढ़ाना शुरू करते हैं आप सोचते हैं कि इस विषय की सामग्री एवं क्षेत्र क्या होगा। यहां मूल शब्द 'पर्यावरण' है। इस शब्द का भिन्न-भिन्न लोगों के लिए भिन्न-भिन्न अर्थ हो सकते हैं। आपने वह कहानी सुन रखी होगी जिसमें कुछ नेत्रहीन व्यक्ति हाथी को छूकर पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं कि हाथी कैसा होता है। हर व्यक्ति अपना विचार इस बात पर आधारित करता है कि उसने हाथी के शरीर का कौन सा भाग छुआ; पूंछ, टांग, सूंड या कान। पहले ने सोचा यह सांप जैसा है, दूसरे ने कहा खंबा है, तीसरे ने इसे रस्सी बताया और चौथे ने सोचा यह पंखा है। वास्तव में सभी व्यक्ति अपने विचार में ठीक थे लेकिन संपूर्ण तस्वीर कोई नहीं दे पाया। पर्यावरण शब्द भी कुछ इसी प्रकार का है। हर व्यक्ति को कुछ कुछ जानकारी है कि यह क्या है और इसमें क्या-क्या सम्मिलित है। अपनी-अपनी जगह सभी ठीक हैं, फिर भी, कभी-कभी विचार एक पहेली के अलग-अलग भागों की तरह बिखरे रहते हैं।

यह इकाई इन टुकड़ों को जोड़कर एक पूर्ण तस्वीर बनाने का प्रयास करेगी। इससे आपको यह समझने में सहायता मिलेगी कि पर्यावरण का अर्थ एवं क्षेत्र क्या होता है। इस इकाई में हम इस पर भी चर्चा करेंगे कि हमारे जन्म के समय से ही

टिप्पणी

इकाई-6 : पर्यावरण विज्ञान में शिक्षण-अधिगम

संरचना

6.0 प्रस्तावना

6.1 अधिगम उद्देश्य

6.2 प्रत्येक बच्चे को सीखने में लगाना

- *6.2.1 मीता कक्षा III के बच्चों को पर्यावरण अध्ययन पढ़ाती है।*
- *6.2.2 अमृत, पर्यावरण अध्ययन का एक शिक्षक*
- *6.2.3 पढ़ो तथा विचार करो*

6.3 क्रिया-आधारित अधिगम

- *6.3.1 पर्यावरण अध्ययन हेतु किस प्रकार की क्रियाएं?*
- *6.3.2 नमूने के तौर पर कुछ क्रियाएं*
- *6.3.3 क्रिया-आधारित शिक्षण-अधिगम का आयोजन करना*
- *6.3.4 क्रिया आधारित अधिगम को कार्यान्वित करना*
- *6.3.5 क्रिया आधारित अधिगम उपागमों के उपयोग*
- *6.3.6 पर्यावरण अध्ययन की एक क्रिया का उदाहरण*

6.4 सहयोगी अधिगम उपागम

- *6.4.1 सहयोगी अधिगम के उपयोग*
- *6.4.2 सहयोगी अधिगम के नियम*
- *6.4.3 पर्यावरण अध्ययन हेतु सहयोगी अधिगम के उपयोग*
- *6.4.4 सहयोगी अधिगम की चुनौतियाँ*

6.5 शिक्षण-अधिगम की उचित विधि का चयन करना

6.6 प्रेक्षण विधि

- *6.6.1 प्रेक्षण विधि का उपयोग करना*
- *6.6.2 उपयोगिताएं*

6.7 सारांश

6.8 प्रगति जांच के उत्तर

6.9 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

6.0 प्रस्तावना

आपने प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य एवं क्षेत्र के बारे में पढ़ा। उस खण्ड में पर्यावरण अध्ययन के

टिप्पणी

इकाई–7 : पर्यावरण विज्ञान के अधिगम के अनुपूरक संसाधन

संरचना

7.0 प्रस्तावना

7.1 अधिगम उद्देश्य

7.2 अधिगम संसाधन क्या है?

7.3 पर्यावरण–अध्ययन में अधिगम संसाधनों का महत्त्व

7.4 संसाधनों के प्रकार तथा उनका उपयोग

7.4.1 समुदाय संसाधन

7.4.2 सांस्थानिक संसाधन

7.4.3 अधिगम संसाधनों के रूप में प्राकृतिक तत्त्व

7.4.4 मीडिया संसाधन

7.4.5 प्रौद्योगिकीय संसाधन

7.4.6 मानव निर्मित संसाधन

7.5 स्थानिक रूप से उपलब्ध सामग्री को रचनात्मक रूप से प्रयोग करना

7.6 विद्यालय संसाधन केंद्रः भण्डार गृह निर्माण

7.7 संसाधन संकुल (पूल) के विकास एवं रखरखाव में बच्चों एवं समुदाय की भूमिका

7.8 सारांश

7.9 प्रगति जांच के उत्तर

7.10 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

7.0 प्रस्तावना

इस कोर्स की पहली इकाइयों में आपने पर्यावरण अध्ययन के क्षेत्र एवं अधिगम प्रक्रियाओं के बारे में पढ़ा। आपको याद होगा कि पर्यावरण का अर्थ है आसपास का परिवेश जिसमें प्राकृतिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक पर्यावरण भी होता है। पर्यावरण अध्यन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है पर्यावरण के माध्यम से पढ़ाना। पर्यावरण अध्ययन के इस पक्ष को केन्द्रित कर तथा पूरे वर्ष के लिए पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण अधिगम की योजना बनाने की आवश्यकता को दोहराते हुए, यह पाठ स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों एवं सामग्री को पर्यावरण अध्ययन के लिए आयोजित करने से संबंधित है।

पर्यावरण अध्ययन में अधिगम को प्रोत्साहित करने के लिए रचनात्मक शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं की आवश्यकता है। इसलिए शिक्षण–अधिगम के स्थानीय संसाधनों तथा सामग्री का विकास, रखरखाव, आपस में बांटना तथा उपयोग करना पर्यावरण अध्ययन के शिक्षक के लिए महत्त्वपूर्ण है। इस इकाई में इन्हीं पहलुओं पर चर्चा होगी तथा पर्यावरण अध्ययन शिक्षण अधिगम हेतु स्थानीय संसाधन एवं सामग्री पर विचार किया जाएगा।

टिप्पणी

इकाई-8: पर्यावरण विज्ञान में अधिगम का आकलन करने हेतु उपकरण एवं तकनीकें

संरचना

8.0 प्रस्तावना

8.1 अधिगम उद्देश्य

8.2 किस प्रकार मूल्य-निर्धारण पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य से संबंधित हैं?

8.3 हमें बच्चों के अधिगम उपकरण मूल्य-निर्धारण क्यों करना चाहिए?

- 8.3.1 मूल्य-निर्धारण का नैदानिक एवं निर्देशनात्मक उद्देश्य
- 8.3.2 मूल्य-निर्धारण अध्यापन के बारे में भी बताता हैं।

8.4 सतत् एवं व्यापक मूल्य-निर्धारण

8.5 मूल्य-निर्धारण के प्रकार

- 8.5.1 औपचारिक एवं अनौपचारिक मूल्य-निर्धारण
- 8.5.2 निर्माणात्मक एवं संकलित मूल्य-निर्धारण

8.6 मूल्य-निर्धारण को क्या अच्छा बनाता हैं?

8.7 अधिगम केन्द्रित मूल्य-निर्धारण

- 8.7.1 स्व-मूल्य-निर्धारण तथा समकक्ष समूह का मूल्य-निर्धारण
- 8.7.2 संचित संचयी रिकार्ड
- 8.7.3 परियोजनाओं के माध्यम से मूल्य-निर्धारण
- 8.7.4 भागीदारी की मात्रा एवं गुणवत्ता

8.8 अधिगम और अधिगम के लिए मूल्य-निर्धारण

8.9 मूल्य-निर्धारण उपकरण क्या होते हैं?

- 8.9.1 मूल्य-निर्धारण के उपकरणों का विकास एवं चुनाव
- 8.9.2 मूल्य-निर्धारण के उपकरणों याद रखने वाले बिन्दु

8.10 मूल्य-निर्धारण तकनीकें

- 8.10.1 मौखिक तकनीकें
- 8.10.2 लिखित तकनीकें
  - 8.10.2.1 निबन्ध परीक्षण
  - 8.10.2.2 लघु-उत्तर परीक्षण
  - 8.10.2.3 वस्तुनिष्ठ परीक्षण
- 8.10.3 निष्पादन परीक्षण
- 8.10.4 पर्यावरण अध्ययन में गलत उत्तरों को ठीक करना (निबंधात्मक परीक्षा का एक रूपान्तरण)

टिप्पणी

8.10.5 प्रेक्षण तकनीक

8.10.6 पर्यावरण अध्ययन में मूल्य-निर्धारण के अतिरिक्त विचार

8.11 पर्यावरण अध्ययन में अधिगम उद्देश्यों के मूल्य-निर्धारण के दौरान ध्यान रखने योग्य विन्दु

8.12 सारांश

8.13 प्रगति जांच के उत्तर

8.14 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.15 अन्त्य इकाई अभ्यास

8.0 प्रस्तावना

विद्यालय में बच्चों के अधिगम का महत्वपूर्ण भाग होता है मूल्य-निर्धारण। बच्चे तथा उसके अभिभावकों के लिए काफी खुशी या दुख का कारण बन सकता हैं। एक अध्यापक को बच्चों की प्रगति को जांचने तथा रिपोर्ट करने के लिए तथा आगे पढ़ाने के निर्णय लेने के लिए लगातार मूल्य-निर्धारण करना पड़ता है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि अध्यापक मूल्य-निर्धारण के प्रति जिम्मेदार तथा सुग्राही उपागम अपनाए।

इस इकाई में आप अन्य कई मुद्दों के बारे में पढ़ेंगे जैसे कि पर्यावरण अध्ययन में मूल्य-निर्धारण ''क्या, क्यों और कैसे?'' पर्यावरण अध्ययन में मूल्य-निर्धारण के विभिन्न उपकरण एवं तकनीकों के बारे में भी सीखेंगे।

8.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत में आप इस योग्य हो जाएंगे कि:

- पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में अधिगम के मूल्य-निर्धारण के उद्देश्यों का कथन कर पाएंगे।
- पर्यावरण अध्ययन में सतत् एवं व्यापक मूल्य-निर्धारण के प्रयोग को स्पष्ट कर पाएंगे।
- विभिन्न प्रकार के मूल्य-निर्धारण के महत्त्व का वर्णन कर पाएंगे जैसे औपचारिक एवं अनौपचारिक तथा निर्माणात्मक एवं सकलित मूल्य-निर्धारण
- प्रभावी मूल्य-निर्धारण पद्धतियों की सूची बना पाएंगे।
- मूल्य निर्धारण में विभिन्न अधिगम केन्द्रित पद्धतियों को व्यवहार में ला पाएंगे।

8.2 किस प्रकार मूल्य-निर्धारण पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य से संबंधित है?

पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य विद्यार्थी एवं उसके चारों ओर के वातावरण में गहरा संबंध बनाने की ओर लक्षित होते हैं। अत: पर्यावरण अध्ययन में मूल्य-निर्धारण इस संबंध को सुदृढ के लिए उचित सहायता के रूप में प्रयोग होना चाहिए।

मूल्य-निर्धारण बच्चों के शैक्षिक कार्य के प्रति प्रतिक्रिया के बारे में सूचनाएं एकत्र करने, समझने, रिकार्ड करने तथा उपयोग करने की प्रक्रिया है। शैक्षिक कार्य या अधिगम अनुभव कुछ शैक्षिक उद्देश्यों पर आधारित होते हैं। उदाहरण के लिए जब अध्यापक अपने बच्चों को खुशी से तथा नियमित रूप से प्रांगण में लगे पौधों को पानी देते हुए देखता है तो

टिप्पणी

इकाई-9 : गणित शिक्षण के विविध पहलू

संरचना

9.0 प्रस्तावना

9.1 अधिगम उद्देश्य

9.2 गणित शिक्षा के उद्देश्य

9.2.1 विस्तृत एवं संक्षिप्त उद्देश्य

9.2.2 विशिष्ट उद्देश्य

9.3 गणित की प्रकृति

9.4 गणित शिक्षण का महत्व

9.4.1 वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में गणित

9.4.2 गणित एवं ज्ञान की अन्य शाखाएँ

9.4.3 गणित और समस्या समाधान

9.4.4 गणितीय सोच की योग्यता

9.5 वैदिक गणित एवं इसका अनुप्रयोग

9.6 सारांश

9.7 प्रगति जाँच के उत्तर

9.8 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.9 अन्त्य इकाई अभ्यास

9.0 प्रस्तावना

गणित हमारे जीवन के सभी पहलुओं में व्याप्त है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसान हो, दैनिक मजदूर, कारीगर, अध्यापक या वैज्ञानिक हो सभी उपने दिन-प्रति की अलग-अलग परिस्थितियों में गणित के सिद्धान्तों का उपयोग करते हैं। हमारे जीवन में गणित का प्रमुख स्थान है, इसलिए स्कूल पाठ्यक्रम में गणित को एक विशेष स्थान प्राप्त है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के गणित दस्तावेज में स्पष्ट रूप से उल्लेखित है कि अच्छी गणित शिक्षा का परिदृश्य दो मुख्य अवधारणाओं पर आधारित है कि सभी विद्यार्थी गणित सीख सकते हैं और सभी विद्यार्थियों को गणित सीखने की आवश्यकता है। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम सभी विद्यार्थियों को उच्च स्तरीय गणित शिक्षा प्रदान करें। गणित के इस परिदृश्य को साकार करने के लिए हमें निम्नांकित मुद्दों का समीक्षात्मक रूप से विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

- विद्यालय स्तर पर गणित शिक्षण के क्या लक्ष्य होने चाहिए।
- अध्यापक, विद्यार्थियों में गणित के प्रति रुचि किस प्रकार विकसित कर सकते हैं?
- विद्यार्थियों में किस प्रकार के ज्ञान और कौशल का विकास किया जा सकता है?
- गणित अधिगम की क्या प्रकृति होनी चाहिए?
- किस प्रकार विद्यार्थी मानसिक रूप से गणना के कौशल में सिद्धहस्त हो सकते हैं?

टिप्पणी

इकाई-10 : गणित की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

संरचना

10.0 प्रस्तावना

10.1 अधिगम उद्देश्य

10.2 बच्चे के सोचने के तरीके

10.2.1 संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ

10.2.2 गणितीय अवधारणा का विकास

10.3 पूर्व-बाल्यावस्था में गणित अधिगम

10.3.1 गणित अधिगम के तरीके

10.3.2 गणित का भय

10.3.3 गणित अधिगम को आनंददायक बनाना

10.4 गणित अधिगम एवं शिक्षण अधिगम पद्धतियाँ

10.4.1 आगमन एवं निगमन पद्धति

10.4.2 विश्लेषण एवं संश्लेषण पद्धति

10.4.3 परियोजना पद्धति

10.4.4 समस्या समाधान एवं समस्या प्रस्तुतीकरण

10.5 गणित अधिगम में अधिगम केन्द्रित उपागम

10.5.1 पाँच-ई अधिगम प्रतिमान

10.5.2 रचनात्मक व्याख्या (ICON) अभिकल्पना प्रतिमान

10.5.3 अवधारणा का खाका तैयार करना

10.5.4 क्रियाकलाप आधारित अधिगम

10.6 गणित अधिगम को अधिक चुनौतीपूर्ण एवं संतोषजनक बनाना

10.6.1 शिक्षार्थी की सृजनात्मक योग्यताओं का विकास करना

10.6.2 गणित प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय का उपयोग

10.7 सारांश

10.8 प्रगति जाँच के उत्तर

10.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

10.0 प्रस्तावना

सभी विषयों में गणित विषय का अपना विशेष स्थान है। आपने अध्यापक होने के नाते एवं अपने विद्यालयी समय में महसूस किया होगा कि अन्य विषयों की तुलना में बच्चों पर गणित में उपलब्धि को लेकर एक अनावश्यक दबाव रहता है। अनुसंधानों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि बच्चों में सोचने की क्षमता में वृद्धि एवं गणितीय अवधारणाओं का नजदीकी

टिप्पणी

इकाई-11 : शिक्षण अधिगम सामग्री तथा गणित अधिगम में अन्य संसाधान

संरचना

11.0 प्रस्तावना

11.1 अधिगम उद्देश्य

11.2 शिक्षण अधिगम सामग्री का अर्थ एवं आवश्यकता

11.2 शिक्षण अधिगम सामग्री का वर्गीकरण

11.3.1 शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रकार

11.3.2 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एवं शिक्षण अधिगम सामग्री

11.3.3 गतिविधि आधारित अधिगम सामग्री

11.4 शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रबंधन

11.4.1 शिक्षण अधिगम सामग्री का एकगीकरण, निर्माण एवं रख-रखाव

11.4.2 शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग एवं रख-रखाव

11.4.3 शिक्षण अधिगम सामग्री कोना एवं इसका उपयोग

11.5 गणित अधिगम स्रोत के रूप में पाठ्य पुस्तक

11.5.1 अधिगम हेतु पाठ्यपुस्तक

11.5.2 पाठ्यपुस्तकों से अलग अधिगम

11.6 गणित अधिगम स्रोत के रूप में विद्यालयी संसाधन

11.7 गणित अधिगम स्रोत के रूप में गणित प्रयोगशाला एवं गणित कोना

11.8 सारांश

11.9 प्रगति जाँच के उत्तर

11.10 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

11.0 प्रस्तावना

पूर्व की इकाई में आप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया हेतु विविध तरीकों को सीख चुके हैं। इनमें से किसी भी तरीके को कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में लागू करने के दौरान आप कुछ सामग्री की आवश्यकता होती है जो शिक्षार्थी को गणित की विभिन्न अवधारणाओं को स्पष्ट करने में मदद करती है। ऐसी सामग्री को शिक्षण अधिगम सामग्री कहते हैं। विविधा प्रकार की शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग करने से बच्चे सीखने के दौरान प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। इस इकाई में आप विविध प्रकार की शिक्षण अधिगम सामग्री तथा गणित सीखने-सिखाने की प्रक्रिया मेकं उनके उपयोग को जानेंगे।

मूलभूत रूप से गणित तार्किकता, सामान्यीकरण एवं अमूर्त अवधारणाओं पर आधारित है। इन अमूर्त अवधारणाओं पर गणित की अवधारणाओं का निर्माण गणित की संरचना को ओर भी जटिल बना देता है। इसलिए गणित में अधिगम

इकाई-12 : गणित अधिगम में आकलन

संरचना

12.0 प्रस्तावना

12.1 अधिगम उद्देश्य

12.2 गणित अधिगम के आकलन की प्रकृति

12.2.1 गणित अधिगम के आकलन के विविध आयाम

12.2.2 अधिगम केन्द्रित उपागम के आकलन की विशेषताएँ

12.3 आकलन में उदगमित प्रवृत्तियाँ/प्रचलन

12.3.1 स्व-आकलन

12.3.2 समूह आकलन

12.3.3 दत्त कार्य के द्वारा आकलन

12.3.4 विभिन्न क्रियाकलापों में सहभागिता

12.3.5 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

12.4 गणित में परीक्षण पदों के विविध प्रकार

12.4.1 उद्देश्य आधारित पद

12.4.2 मुक्त परीक्षण पद

12.5 गणित अधिगम का आकलन

12.5.1 परियोजना

12.5.2 पोर्टफोलियो

12.5.3 प्रदर्शनी में सहभागिता

12.5.4 गणित में क्विज एवं खेल

12.5.5 गणितीय क्रियाओं के दौरान विद्यार्थियों का अवलोकन

12.6 आकलन हेतु सूचनाओं का एकत्रीकरण एवं अभिलेखन

12.7 गणित अधिगम में विविध मुद्दों की पहचान

12.7.1 सबल एवं निबल पक्ष की पहचान

12.7.2 कठिन समस्याओं की पहचान एवं निराकरण

12.7.3 पृष्ठ पोषण (feedback) प्रदान करना

12.8 आकलन के माप का अनुवर्तन

12.9 सारांश

12.9 प्रगति जाँच के उत्तर

12.10 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

टिप्पणी

इकाई-13 : विज्ञान की प्रकृति

संरचना

13.0 प्रस्तावना

13.1 अधिगम उद्देश्य

13.2 विज्ञान क्या है?

- *13.2.1 परिभाषा और सामान्य विशेषताएं*
- *13.2.2 विज्ञान की प्रकृति*
- *13.2.3 विज्ञान की प्रक्रिया*

13.3 विज्ञान का ज्ञान

- *13.3.1 वैज्ञानिक साक्षरता*
- *13.3.2 परिकल्पना*
- *13.3.3 सिद्धान्त*
- *13.3.4 प्राकृतिक नियम*
- *13.3.5 तथ्य*
- *13.3.6 प्रमाण*
- *13.3.7 प्रतिमान*
- *13.3.8 आगमनात्मक संदर्भ*
- *13.3.9 निगमनात्मक संदर्भ*

13.4 वैज्ञानिक सोच

- *13.4.1 अनुभववाद*
- *13.4.2 संदेहवाद*
- *13.4.3 बुद्धिवाद/तर्कणावाद*

13.5 वैज्ञानिक विधियां

- *13.5.1 वैज्ञानिक विधि क्या है?*
- *13.5.2 वैज्ञानिक विधि के चरण*
- *13.5.3 वैज्ञानिक दृष्टिकोण*

13.6 वैज्ञानिक जांच की अवधारणा

- *13.6.1 जांच के रूप (प्रकार)*

13.7 वैज्ञानिक जांच की प्रक्रिया

- *13.7.1 शिक्षार्थियों को वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के साथ जोड़ना*
- *13.7.2 वैज्ञानिक जांच के लिए प्रश्न पूछना*
- *13.7.3 दिशा ज्ञान के लिए परिकल्पना बनाना*
- *13.7.4 अवलोकन के आधार पर दिशा ज्ञान हेतु भविष्यवाणी करना*
- *13.7.5 सूचना एकत्र करने के लिए अवलोकन*
- *13.7.6 संबंध और पैटर्न ढूंढना*

इकाई-14: विज्ञान शिक्षण के विभिन्न उपागम एवं विधियाँ

संरचना

14.0 प्रस्तावना

14.1 अधिगम उद्देश्य

14.2 शिक्षण की विधि

14.3 वर्णनात्मक उपागम या प्रसारण उपागम

- *14.3.1 नियम का कथन*
- *14.3.2 नियम का स्पष्टीकरण*
- *14.3.3 नियम का औचित्य*
- *14.3.4 नियम का प्रयोग*
- *14.3.5 लाभ*
- *14.3.6 सीमाएं*

14.4 खोज उपागम

- *14.4.1 नियम का स्पष्टीकरण*
- *14.4.2 नियम का औचित्य*
- *14.4.3 नियम का कथन*
- *14.4.4 नियम का प्रयोग*
- *14.4.5 लाभ*
- *14.4.6 सीमाएं*

14.5 जांच उपागम या प्रक्रिया कौशल

- *14.5.1 नियम का स्पष्टीकरण*
- *14.5.2 नियम का औचित्य*
- *14.5.3 नियम का कथन*
- *14.5.4 नियम का प्रयोग*
- *14.5.5 लाभ*
- *14.5.6 सीमाएं*

14.6 सारांश

14.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

14.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

14.0 प्रस्तावना

एक अध्यापक होने के नाते आपको यह महसूस करना चाहिए कि आप पाठ्यक्रम को इस प्रकार सम्पादित करें जिससे

इकाई-15 : पाठ योजना एवं कम लागत या बिना लागत वाले शिक्षण संसाधन

संरचना

15.0 प्रस्तावना

15.1 अधिगम उद्देश्य

15.2 योजना का सिंहावलोकन

15.3 विज्ञान में योजना बनाना व पाठ्यक्रम पूरा करना

- *15.3.1 पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या*
- *15.3.2 पाठ्यक्रम और अनुदेशन*
- *15.3.3 विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य*
- *15.3.4 प्रारंभिक स्तर पर वैज्ञानिक अवधारणाएं*
- *15.3.5 विज्ञान पाठ्यक्रम की योजना संबंधी मुद्दे*
- *15.3.6 विज्ञान पाठ्यक्रम की योजना*

15.4 कक्षा स्तर पर योजना बनाना : पाठ योजना

- *15.4.1 एक अच्छी तरह से विकसित पाठ-योजना*
- *15.4.2 विज्ञान के पाठों की योजना बनाना*
- *15.4.3 शैक्षणिक विश्लेषण*
- *15.4.4 पाठ योजना बनाने के चरण*
- *15.4.5 पाठ का डिजाइन/प्रारूप*

15.5 विभिन्न संसाधनों की पहचान व प्रयोग

- *15.5.1 संसाधनों का अर्थ*
- *15.5.2 संसाधनों का महत्व*
- *15.5.3 शैक्षणिक संसाधनों के प्रकार*
  - *15.5.3.1 विद्यालय स्तर पर संसाधन*
  - *15.5.3.2 स्थानीय स्तर पर संसाधन*
- *15.5.4 संसाधनों का वर्गीकरण*
  - *15.5.4.1 गैर विद्युत संसाधन*
  - *15.5.4.2 विद्युत संसाधन*
- *15.5.5 संसाधनों के लाभ*
- *15.5.6 संसाधनों के चुनाव के मापदंड*

15.6 रिकार्डिंग एवं रिर्पोटिंग व रिपोर्ट करना

- *15.6.1 शिक्षार्थियों अधिगम का मूल्यांकन*
- *15.6.2 नियोजित पाठ्यक्रम का मूल्यांकन*
- *15.6.3 शिक्षक की भूमिका*

15.7 सारांश

15.8 प्रगति जाँच के उत्तर

टिप्पणी

इकाई-16 : विज्ञान के अधिगम का आकलन

संरचना

16.0 *प्रस्तावना*

16.1 अधिगम उद्देश्य

16.2 कुछ सामान्यत: प्रयोग की जाने वाली शब्दावली

16.2.1 शब्दों की परिभाषाएं

16.3 मूल्यांकन की अवधारणा

16.4 उद्देश्य व विशिष्टीकरण

16.4.1 विज्ञान के लिए उद्देश्य व विशिष्टीकरण लिखना

16.5 मूल्यांकन के प्रकार

16.5.1 रचनात्मक मूल्यांकन

16.5.2 योगात्मक मूल्यांकन

16.6 आंतरिक मूल्यांकन

16.7 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

16.7.1 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए उपकरण

16.7.2 रचनात्मक मूल्यांकन के लिए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

16.7.3 योगात्मक मूल्यांकन के लिए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

16.8 निदानात्मक व उपचारात्मक शिक्षण

16.9 बोद्धात्मक, भावात्मक व कौशलात्मक क्षेत्रों का मूल्यांकन

16.10 बच्चों के विचार, कौशल व मनोवृत्तियों के आकलन की रचना बनाना।

16.11 सारांश

16.12 मुख्य बिंदु

16.13 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

16.14 शब्दावली

16.15 अन्त्य इकाई अभ्यास

16.0 प्रस्तावना

इस विषय में अभी तक आपने पढ़ा विज्ञान की प्रकृति, प्रक्रिया के रूप में विज्ञान का महत्व, विज्ञान शिक्षण के विभिन्न उपागम। आपने विभिन्न प्रकार के अधिगम अनुभवों के बारे में भी सीखा जो अधिगम को सुगम बनाने के लिए उपयोगी हैं व उन अनुभवों की योजना बनाना भी सीखा। हालांकि यह सब बहुत महत्वपूर्ण व अनिवार्य हैं, इतना ही महत्वपूर्ण है कक्षा में होने वाली शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की प्रभाविता व उपयुक्तता के बारे में जानना। इसलिए इस इकाई में हम शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण व अनिवार्य पक्ष-आकलन व मूल्यांकन के बारे में सीखेंगे।

टिप्पणी

इकाई-17 : प्रारंभिक विद्यालयी पाठ्यचर्या में सामाजिक अध्ययन की प्रकृति

संरचना

17.0 प्रस्तावना

17.1 अधिगम उद्देश्य

17.2 सामाजिक अध्ययन : विकास एवं अवधारणा

17.2.1 सामाजिक अध्ययन का विकास

17.2.2 सामाजिक अध्ययन की अवधारणा एवं सामाजिक अध्ययन की अवधारणा के साथ इसके संबंध

17.2.3 उच्च प्राथमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन

17.3 सामाजिक अध्ययन : विभिन्न कालों में

17.3.1 पूर्व-आधुनिक संसार में सामाजिक अध्ययन

17.3.2 आधुनिक एवं समकालीन संसार में सामाजिक अध्ययन

17.3.3 भारतीय परिप्रेक्ष्य में सामाजिक अध्ययन : विभिन्न कालों में

17.4 समाज की वर्तमान स्थिति

17.4.1 वर्तमान सामाजिक घटनाएं एवं चुनौतियां

17.4.2 विभेदीकृत समाज में सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र

17.5 सामाजिक अध्ययन के घटक

17.5.1 सामाजिक अध्ययन परिवार के अन्तर्गत सुविचारित विषय

17.5.2 विद्यालय स्तर पर सामाजिक अध्ययन के अनुदेशात्मक घटक

17.6 सामाजिक अध्ययन में अन्तर्विषयक और एकीकरण परिप्रेक्ष्य

17.6.1 सामाजिक अध्ययन में अन्तर्विषयक परिप्रेक्ष्य

17.6.2 सामाजिक अध्ययन में एकीकरण परिप्रेक्ष्य

17.7 सारांश

17.8 प्रगति जांच के उत्तर

17.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

17.10 शब्दावली

17.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

17.0 प्रस्तावना

सामाजिक अध्ययन उस ज्ञान के क्षेत्र का निर्माण करता है जिसमें स्त्री/पुरुष के संबंधों का उनके सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण के साथ अध्ययन किया जाता है। अध्ययन के औपचारिक क्षेत्र के रूप में (मुख्यतया उच्च शिक्षा/विश्वविद्यालयी शिक्षा स्तर पर अध्ययन का क्षेत्र) अठारहवीं शताब्दी के बाद का है और बीसवीं शताब्दी से सामाजिक अध्ययन भारत सहित संसार के लगभग सभी देशों में पाठ्यक्रम का भाग बन गया। अब आप स्मरण कीजिए, जब आप विद्यालय स्तर पर अध्ययन कर रहे थे, तब आपने भी सामाजिक अध्ययन (या सामाजिक अध्ययन) अपने विद्यालय विषय के भाग के रूप में पढ़ा होगा। इस इकाई में हम सामाजिक अध्ययन के विकास एवं अवधारणा, विभिन्न कालों में सामाजिक अध्ययन, समाज की वर्तमान स्थिति, सामाजिक अध्ययन के घटक ओर सामाजिक अध्ययन में अन्तर्विषयक एवं एकीकरण परिप्रेक्ष्य के विशेष संदर्भ के सामाजिक अध्ययन की प्रकृति से परिचित होंगे। इस इकाई में हम आपके सम्मुख सैद्धान्तिक चर्चा एवं तर्कों के

इकाई-18 : सामाजिक अध्ययन शिक्षण के अनुपूरक संसाधान

संरचना

18.0 प्रस्तावना

18.1 अधिगम उद्देश्य

18.2 अधिगम स्रोत : अवधारणा, आवश्यकता और महत्त्व

18.3 अधिगम संसाधनों के प्रकार

- *18.3.1 Realia और चित्रावली*
- *18.3.2 मानचित्र और ग्लोब*
- *18.3.3 प्रतिरूप (मॉडल)*
- *18.3.4 चार्ट्स ग्राफ़्स और कार्टून*
- *18.3.5 कालरेखा*
- *18.3.6 पुस्तकें*
- *18.3.7 समाचार पत्रों की कटिंग्स : क्यों और कैसे*
- *18.3.8 संग्रहालय*
- *18.3.9 चलचित्र*
- *18.3.10 इन्टरनेट*
- *18.3.11 विद्यालय और समुदाय का अधिगम स्रोत के रूप में उपयोग*

18.4 अधिगम संसाधनों का विकास

18.5 अधिगम संसाधनों की व्यवस्था

18.6 सारांश

18.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

18.8 इकाई अन्त्य अभ्यास

18.0 प्रस्तावना

अग्रिम चरण में आपके सामाजिक विज्ञान शिक्षण कौशलों को निखारने और विभिन्न संसाधनों का विकास और प्रयोग कर सकने की व्यावसायिक योग्यता के विकास में आपकी सहायता करने के लिये, अधिगम संसाधनों पर एक इकाई प्रस्तुत की जा रही है। आपको कक्षा-कक्ष क्रियाकलापों जैसे निर्देशों की योजना, निर्देशात्मक अधिगम व्यूह रचना और कक्षा व्यवस्था संबंधी निर्देशों के महत्त्व की जानकारी से अवगत होना चाहिये। ये सभी क्रियाकलाप, विभिन्न संसाधनों का प्रयोग, शिक्षक के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। निर्देशों की गुणवत्ता, शिक्षक द्वारा इन संसाधनों के उचित प्रयोग पर निर्भर करती है। इसलिये, इन संसाधनों के बारे में सीखना और उनका निर्देशात्मक उद्देश्यों के हेतु सर्वोत्तम प्रयोग कैसे किया जाए, बहुत ही उचित है। इस इकाई में हम अधिगम स्रोत के अर्थ, एक स्रोत केंद्र, और एक स्रोत केंद्र पर उपलब्ध विभिन्न प्रकार के संसाधनों के परीक्षण की चर्चा करेंगे। हम इन संसाधनों की व्यवस्था करने तथा साथ ही साथ सरलता से स्रोत उपलब्ध न होने पाने की स्थिति में आप स्वयं इन संसाधनों की उत्पत्ति कर सकें से संबंधित कुछ सुझावों की चर्चा करेंगे। इन संसाधनों की उत्पत्ति और व्यवस्था करने में अध्यापक और बच्चे की भूमिका की भी चर्चा करेंगे। कैसे अध्यापक, बच्चे और समुदाय निर्देशात्मक स्रोत के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं, पर भी इस इकाई में चर्चा की जायेगी।

इकाई-19 : सामाजिक अध्ययन की शिक्षण अधिगम रणनीतियाँ

संरचना

19.0 प्रस्तावना

19.1 अधिगम उद्देश्य

19.2 एक अधिगमकर्ता केंद्रित सामाजिक विज्ञान कक्षा के अपेक्षित सामान्य लक्षण

19.3 एक रणनीति का चयन निर्धारित करने वाले कारक

19.4 शिक्षण-अधिगम रणनीतियां

- *19.4.1 भूमिका निर्वाह*
- *19.4.2 परियोजना विधि*
- *19.4.3 नाटक (ड्रामा)*
- *19.4.4 सहयोगी अधिगम*
- *19.4.5 संकल्पना चित्रण*
- *19.4.6 विवेचनात्मक शिक्षा-शास्त्र*
- *19.4.7 समस्या समाधान*
- *19.4.8 प्रयोगात्मक अधिगम*
- *19.4.9 वृतान्त/कथा वाचन*
- *19.4.10 क्षेत्र का दौरा*
- *19.4.11 विचार-विमर्श विधि*
- *19.4.12 मानचित्र आधारित अधिगम*

19.5 सारांश

19.6 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

19.7 अन्त्य इकाई अभ्यास

19.0 प्रस्तावना

हम जानते हैं कि उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विद्यालय का एक विषय है और यह समाज के विविध सम्बद्धों को आवृत करता है तथा इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, मानव विज्ञान जैसे विषयों से विस्तृत विषय वस्तु को शामिल करता है। सामाजिक विज्ञान का ज्ञान एक शांतिपूर्ण समाज के निर्माण के लिए अपरिहार्य है। हम जैसे एक बहुलवादी समाज में यह महत्त्वपूर्ण है कि सभी धर्म एवं सामाजिक समूह सामाजिक विज्ञान में पाठ्यपुस्तकों को जोड़ने में सक्षम है। NCF (2005) कहता है कि विषय वस्तु स्थानीय संसाधनों से लिये गये गतिविधियों के माध्यम से संप्रेषित होनी चाहिए।

सामाजिक विज्ञान का शिक्षण अधिगमकर्ताओं में मानवीय मूल्यों, स्वतंत्रता, विश्वास, आपसी सम्मान तथा विविधता के लिए सम्मान की एक मजबूत समझ सृजित करता है। सामाजिक विज्ञान का शिक्षण विद्यार्थियों में एक विवेचित, नैतिक तथा मानसिक ऊर्जा उत्पन्न करने पर लक्षित होना चाहिए तथा उन्हें सामाजिक शक्तियों के प्रति सजग करने वाला होना चाहिए जो कि इन मूल्यों के पतन में सहायता करते हैं।

टिप्पणी

इकाई-20 : सामाजिक अध्ययन का आकलन

संरचना

20.0 प्रस्तावना

20.1 अधिगम उद्‌देश्य

20.2 सामाजिक विज्ञान में आकलन-बुनियादी तथ्य

- *20.2.1 बालकों का आकलन क्यों होना चाहिए?*
- *20.2.2 आकलन क्या होना चाहिये?*
- *20.2.3 आकलन कब होना चाहिये?*
- *20.2.4 आकलन कैसे होना चाहिये?*
  - *20.2.4.1 बालकों के बारे में सूचना संग्रह करना*
  - *20.2.4.2 सूचनाओं का अंकन*
  - *20.2.4.3 एकत्रित सूचनाओं की व्याख्या*

20.3 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन C.C.E : पृष्ठ भूमि

- *20.3.1 C.C.E की अवधारणा*
- *20.3.2 C.C.E के उद्देश्य*
- *20.3.3 विद्यार्थी आकलन के क्षेत्र*
  - *20.3.3.1 पाठ्‌यचर्या क्षेत्रों में मूल्यांकन*
  - *20.3.3.2 अन्य पाठ्‌यचर्या क्षेत्रों में मूल्यांकन*
  - *20.3.3.3 सामाजिक व्यैक्तिक गुणी (SPQ) का मूल्यांकन*

20.4 आकलन की विधियाँ

- *20.4.1 आकलन के सूचक*
- *20.4.2 वैकल्पिक आकलन*
  - *20.4.2.1 सृजनात्मक लेखन, अभिनय और नृत्य के माध्यम से आकलन*
  - *20.4.2.2 आकलन के लिये चित्र पठन कार्य*
  - *20.4.2.3 बालकों की चित्रकारी*
  - *20.4.2.4 क्षेत्र भ्रमण*
  - *20.4.2.5 पत्राधान (Portfolio) आकलन*
  - *20.4.2.6 प्रदर्शन आधारित आकलन के लिये निर्देश*

20.5 ग्रेडिंग बनाम अंकन प्रणाली

- *20.5.1 ग्रेड्‌स का प्रयोग*
- *20.5.2 ग्रेड्‌स आकलन की विधियाँ*
- *20.5.3 सम्पूर्ण प्रदर्शन की तुलना: ग्रेड पॉइंट औसत*
- *20.5.4 प्रभावशाली ग्रेडिंग के लिये नियमावली*

टिप्पणी

20.6 सारांश

20.7 प्रगति जाँच के उत्तर

20.8 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

20.9 अन्त्य इकाई अभ्यास

20.0 प्रस्तावना

इस इकाई में हम सामाजिक विज्ञान में आकलन और मूल्यांकन की चर्चा करेंगे। सामाजिक विज्ञान विद्यार्थियों के अधिगम आकलन के लिये प्रयोग की जाने वाली विधियों और उपागमों के बारे में सोचिये। क्या वे आपको विद्यार्थियों के अधिगम के बारे में पूर्णत: जानकारी देने में सहायता प्रदान करती हैं? क्या वे बालक के अधिगम में प्रोत्साहन करती हैं? क्या आप मूल्यांकन की कुछ वैकल्पिक विधियों के बारे में सोच सकते हैं? जिन विधियों का आप पालन करते हैं, उन में क्या त्रुटियाँ है? ये कुछ प्रासंगिक प्रश्न हैं, जिनकी इस इकाई में चर्चा की जायेगी।

20.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप

- उच्च प्राथमिक स्तर पर पालन में लायी जा रही मूल्यांकन की विधियों का वर्णन कर सकेंगे;
- सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन के लिये प्रयोग की जा रही विधियों के गुणों और दोषों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन की कुछ नई विधियों का प्रयोग कर सकेंगे जो विद्यार्थियों के अधिगम को प्रोत्साहित करती हैं।
- सामाजिक विज्ञान में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन उपागम की सराहना कर सकेंगे;
- सामाजिक विज्ञान में विद्यार्थियों के अधिगम का आकलन सतत रूप से कर सकेंगे।
- अंकन प्रणाली बनाम ग्रेडिंग प्रणाली के गुणों की पहचान कर सकेंगे; और
- विशिष्ट रूप से, सामाजिक विज्ञान में, विद्यार्थियों का अधिगम आकलन ग्रेडिंग प्रणाली में कर सकेंगे।

20.2 सामाजिक विज्ञान में आकलन–बुनियादी तथ्य

जब किसी व्यक्ति से पहली बार मिलते हैं, तब हम उस व्यक्ति का किसी न किसी का प्रकार मूल्यांकन कर रहे होते हैं। इस प्रकार का विवरण जैसे-मजाकिया, बुद्धिमान, घमंडी, हाजिर जवाब, अशिष्ट आदि, हम लोगों के बारे में प्रयोग करते हैं जिनसे हम मिलते हैं। एक अध्यापक के रूप में हम प्रत्येक वर्ष नये विद्यार्थियों से मिलते हैं और अपनी बातचीत और/या अवलोकन से उनके बारे में छवि निर्माण करते हैं। ये छवियाँ हमारे द्वारा उनकी विशेषताओं के आकलन के अवलोकन या अन्तर्क्रियाओं के निर्धारण से निर्मित होती हैं। बालक विद्यालय में कैसा प्रदर्शन कर रहे हैं, यह जानने के लिये अध्यापक बहुत सा समय बालकों के आकलन में व्यय करते हैं। किन्तु उनमें से बहुत से अध्यापक इस बात को महत्वपूर्ण नहीं समझते कि विद्यार्थी प्रतिदिन अनौपचारिक रूप से क्या (बातचीत या अवलोकन) करते हैं। परीक्षायें विशेष रूप से बोर्ड परीक्षायें, विद्यालय की मूल्यांकन और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सहित सभी क्रियाकलापों को नकारात्मक रूप में प्रभावित करती हैं। भारतीय शिक्षा प्रणाली में, मूल्यांकन शब्द परीक्षा, तनाव और चिंता से जुड़ा हुआ होता है। इससे

प्रारंभिक शिक्षकों हेतु व्यावसायिक विकास कार्यक्रम

(पी.डी.पी.ई.टी.)

व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम (PCP)

एवं

प्रायोगिक संदर्शिका

525-विद्यालय आधारित गतिविधियाँ (SBA)

526-कार्यशाला आधारित गतिविधियाँ (WBA)

527-विद्यालय आधारित गतिविधियाँ (PT)

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

ए-24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,

गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309

वैबसाइट : www.nios.ac.in

व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम
(PCP)

5.0 अवधि

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के लिए शैक्षिक सत्र 5 घंटे प्रतिदिन के दर से 10 दिनों के लिए 6 वर्ष में 50 घण्टे निर्धारित होंगे।

6.0 उपस्थिति

सत्रांत परीक्षा में भाग लेने की योग्यता के लिए आपकी सत्र में 75 प्रतिशत उपस्थिति आवश्यक है। यदि कोई इसमें असफल रहता है तो उसे अगले वर्ष व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम को दुबारा करना होगा।

7.0 दत्त कार्य

जैसा कि आप जानते हैं सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम सामग्रियों से संबंधित दत्त कार्य पूरा करना तथा जमा कराना अनिवार्य है। दत्त कार्य को पूरा करने हेतु आपको दिशा-निर्देश दिए जायेंगे तथा आप स्वयं भी समूह में अपने विचार साझा कर सकेंगे। जिन प्रश्नों का उत्तर देने में आप कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं, उन्हें लिख लें और उन पर चर्चा कर स्पष्टीकरण प्राप्त करें। दत्त कार्य साधन सेवी द्वारा आकलित किए जायेंगे। दत्त कार्यों को पूर्ण करके जमा कराना सत्रांत परीक्षाओं में भाग लेने हेतु आवश्यक शर्त है। विषय-वस्तु आधारित दत्त कार्य (स्व-अनुदेशन सामग्री के साथ भेजे जाने वाले) अनुदेशन प्रणाली का एक अभिन्न एवं आवश्यक घटक है। दत्त कार्य प्रत्येक सैद्धान्तिक विषय से संबंधित हैं। कार्यक्रम निर्देशिका में दिये गए निर्धारित कार्यक्रमानुसार दत्त कार्य को पूरा करके संबंधित अध्ययन केन्द्र पर जमा कराना आवश्यक है। किन्हीं विशेष परिस्थितियों में यदि कोई विद्यार्थी दत्त कार्य की सूची प्राप्त करना चाहता है तो वह संबंधित अध्ययन केन्द्र से प्राप्त कर सकता है। दत्त कार्य को पूरा करते समय आपको निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना आवश्यक है:

(i) अपने उत्तर को संक्षिप्त एवं प्रणालीबद्ध रखें। अनावश्यक विवरणों से बचने का प्रयास करें और प्रश्न एवं इसके विविध पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करें।

(ii) यदि दत्त कार्य में कोई विशिष्ट सीमा निर्धारित की गई है तो इसका ध्यान रखें। जहाँ तक संभव हो कृपया शब्द सीमा के अन्तर्गत ही प्रश्नों का उत्तर लिखें। साथ ही साथ विवरणों को पर्याप्त रखें और बहुत अधिक छोटा न करें। शब्द सीमा का निर्धारण आपकी अभिव्यक्ति को बांधने के लिए नहीं अपितु आपके द्वारा दिए गए जवाबों को सही दिशा प्रदान करने के लिए किया गया है।

(iii) आपको अपने जवाब अपनी हस्तलिपि में लिखने हैं। यदि आपको लगता है कि आपकी हस्तलिपि पठनीय नहीं है, तब आप उन्हें टंकित करके भेज सकते हैं।

(iv) आपको निर्धारित कार्यक्रमानुसार अपने दत्त कार्य पूर्ण करके संबंधित अध्ययन केन्द्र को भेजने हैं।

(v) इस पाठ्यक्रम में विषयवस्तु आधारित दस दत्त कार्य निर्धारित हैं जिनका अधिभार प्रत्येक विषय हेतु 25 प्रतिशत है। विषय कोड 521, 522 एवं 523 में प्रयोगात्मक आधारित दत्त कार्य हेतु अधिभार 15 प्रतिशत तथा सैद्धान्तिक दत्त कार्यों हेतु अधिभार 10 प्रतिशत निर्धारित है। विषय कोड़ 524 में केवल प्रयोगात्मक

दत्त कार्य निर्धारित है जिनका अधिभार 25% है। दत्त कार्यों को पूरा करने में कोई आन्तरिक छूट नहीं है, सभी दत्त कार्य अनिवार्य हैं। कुल मिलाकर 10 दत्त कार्य पूर्ण करने हैं। यह सभी दत्त कार्य पूर्ण करने के पश्चात् निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अध्ययन केन्द्रों पर जमा कराने आवश्यक हैं। दत्त कार्यों की एक प्रति सदैव अपने पास सुरक्षित रखें।

क्रम संख्या	विषय कोड	दत्तकार्य		अंक		संपूर्ण अंक
		सैद्धांतिक	प्रयोगात्मक	सैद्धांतिक	प्रयोगात्मक	100
1	521	1	1	10	15	25
2	522	1	1	10	15	25
3	523	1	1	10	15	25
4	524	भाषा (एक दत्त कार्य) पर्यावरण अध्ययन (एक दत्त कार्य) गणित (एक दत्त कार्य) विज्ञान सामाजिक अध्ययन (एक दत्त कार्य)		7 6 6 6		25

(कृपया प्रारूप का नियम निष्ठ रूप से पालन करें। यदि आप इस प्रारूप का पालन नहीं करते हैं तो हम आपको (आपके द्वारा पूर्ण किए गए दत्त कार्यों को) पुनः प्रारूप के अनुसार दत्त कार्य को पूरा करके भेजने हेतु बाध्य होंगे। यदि आप अपने दत्त कार्यों पर नामांकन संख्या तथा पता नहीं लिखते हैं तो आपके दत्त कार्य खो सकते हैं जिसका उत्तरदायित्व हमारा नहीं होगा।)

- किसी भी हाल में दत्त कार्यों को पूर्ण करना आवश्यक है। अपूर्ण दत्त कार्य की स्थिति में आपको अच्छे ग्रेड नहीं दिए जायेंगे।
- दत्त कार्यों के उत्तरों हेतु बड़े साइज (fool scap) के कागज का प्रयोग करें। सामान्य कागज का उपयोग करें, कागज बहुत ज्यादा मोटाई का नहीं होना चाहिए।
- कागज के बायीं ओर (3/2)" का हाशिया छोड़ें और अगला उत्तर चार लाईन छोड़कर लिखना शुरु करें। ऐसा करने से साधन सेवी को उपयुक्त स्थान पर टिप्पणी लिखने में सुविधा रहेगी।
- यह सुनिश्चित करें कि आपका उत्तर आपको मुहैया करायी गई स्व-अनुदेशन सामग्री पर आधारित है।
- अपने उत्तर हेतु किसी भी तरह का छपा हुआ लेख नहीं भेजें।

- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को भेजे गए दत्त कार्यों की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें। यदि आपके द्वारा भेजे गुए दत्त कार्य डाक पारगमन में कहीं खो जाते हैं, तो उस स्थिति में पुनः भेजने हेतु यह सुरक्षित प्रति आपकी सहायता करेगी।
- ध्यान रहे कि यदि किन्हीं भी दो दत्त कार्यों के उत्तर एक जैसे पाए गए तो या तो आपको वापस लौटा दिए जायेंगे, या उन्हें जांचा नहीं जाएगा या आपको बहुत ही कम ग्रेड दिए जायेंगे। यह अच्छा नहीं होगा कि आपके दत्त कार्य जाँचे ही न जाएँ अथवा आपको बहुत ही कम ग्रेड दिए जाएँ।

कृपया निर्धारित समयावधि में अपने दत्त कार्य पूर्ण करके संबंधित अध्ययन केन्द्र के समन्वयक/कार्यक्रम प्रभारी को भेज दें। यदि जमा करने के अन्तिम दिन अवकाश है तो आपके जबाब अगले कार्यदिवस तक अवश्य प्राप्त हो जाने चाहिए।

इन दत्त कार्यों के मूल्यांकन परिणाम परीक्षा में अर्हता हासिल करने के लिए अन्तिम प्राप्तांकों में 25 प्रतिशत का अधिभार रखते हैं।

8.0 अध्ययन केन्द्रों पर शिक्षण सत्रों की रूपरेखा

पाठ्यक्रम की अवधि के दौरान अध्ययन केन्द्र पर प्रत्येक विषय में शिक्षण सत्रों का संचालन किया जाएगा। इस कार्यक्रम के दौरान केवल सैद्धान्तिक कार्यों पर चर्चा की जाएगी। ये सत्र रविवार या घोषित अन्य अवकाशों या ऐसे अन्य दिनों में आयोजित होंगे जिनमें अभ्यर्थी को उपस्थित होने में आसानी हो। व्यक्तिगत कार्यक्रम की रूपरेखा इस प्रकार होगी–

10 दिवसीय व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम की रूपरेखा

दिवस	प्रातः कालीन सत्र (प्रातः 10.00 बजे से दोपहर 1 बजे तक)	सांयकालीन सत्र (दोपहर 2:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक)
पहला	उद्घाटन, पंजीकरण, स्वागत परिचय तथा पीडीपीईटी कार्यक्रम पर चर्चा	स्व अनुदेशन सामग्री पर चर्चा
दूसरा	विषय कोड–521 से संबंधित कठिन क्षेत्रों पर चर्चा	विषय कोड–522 से संबंधित कठिन क्षेत्रों पर चर्चा
तीसरा	विषय कोड–523 से संबंधित कठिन क्षेत्रों पर चर्चा	विषय कोड–524 से संबंधित कठिन क्षेत्रों पर चर्चा (भाषा शिक्षण–शास्त्र)
चौथा	विषय कोड–524 से संबंधित कठिन क्षेत्रों पर चर्चा (पर्यावरण अध्ययन शिक्षण–शास्त्र)	विषय कोड–524 से संबंधित कठिन क्षेत्रों पर चर्चा (गणित का शिक्षण शास्त्र)
पाँचवा	विषय कोड–524 से संबंधित कठिन क्षेत्रों पर चर्चा (विज्ञान/सामाजिक अध्ययन शिक्षण शास्त्र)	विषय कोड–521 से संबंधित दत्तकार्यों पर चर्चा
छठा	विषय कोड–522 से संबंधित दत्तकार्यों पर चर्चा	विषय कोड–523 से संबंधित दत्तकार्यों पर चर्चा

525

विद्यालय आधारित गतिविधियाँ (SBA)

1.1 विद्यालय आधारित गतिविधियाँ

विद्यालय आधारित गतिविधियाँ पीडीपीईटी में उपाधि कार्यक्रम के एक मूलभूत घटक के रूप में संस्थापित हैं। कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त एक विद्यालय शिक्षक बहुत सी शैक्षिक और विद्यालय प्रबंधन से संबंधित गतिविधियों के प्रति भी उत्तरदायी होता है। एक सफल एवं सक्षम अध्यापक के रूप में आपको हमेशा समस्त अधिगमकर्त्ताओं के सतत एवं समग्र मूल्यांकन संबंधित निष्पादन, सामाजिक-मनोभाव और उनकी अन्य प्रवृत्तियों तथा रूचियों के बारे में सार्थक सूचनाओं का समग्र अभिलेख रखना पड़ता है। विद्यालय प्रणाली में सामान्यत: सुबह की सभा को संबोधित करने से शुरू कर अन्य बहुत सी विशिष्ट गतिविधियाँ नियमित तौर पर आयोजित की जाती हैं। वास्तविक विद्यालय-विन्यास में आप कुछ गतिविधियों को संगठित करने में सहायक हो इसके लिए आप में प्रवीणता और सक्षमता का विकास अपेक्षित है।

सुव्यवस्थित विद्यालयी प्रक्रिया के लिए विद्यालय आधारित गतिविधियों का अनुभव आपका प्रत्यक्ष प्रदर्शन है। विद्यालय परिस्थिति में परामर्शदाताओं एवं बच्चों के साथ कार्य करने की वास्तविकताओं के प्रति यह आपको अपनी समझ विकसित करने में समर्थ बनाता है। आपके निष्पादन को दिशा निर्देश प्रदान करने वाले परामर्शदाताओं/पर्यवेक्षकों के पर्यवेक्षण के अन्तर्गत आप विद्यालय-विन्यास में वैज्ञानिक प्रेक्षण कार्यान्वित करेंगे। व्यावहारिक समझ में एक योग्य शिक्षक के रूप में व्यावसायिक विशेषज्ञता एवं समझ विकसित करने में विद्यालय आधारित गतिविधियाँ आपको समर्थ बनाती हैं।

यह कार्यक्रम पाठ्यक्रम के दौरान आयोजित किया जायेगा जिसका अधिभार 2 श्रेयांक (क्रेडिट) होगा। आपके अपने विद्यालय-विन्यास में गतिविधियों का आयोजन करना आपसे अपेक्षित है। कुछ वरिष्ठ अध्यापक या पड़ोसी माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक आपके परामर्शदाता/पर्यवेक्षक होंगे। प्रेक्षण से आपको अपनी गतिविधियों का प्रतिवेदन बनाना और एक फाइल बनाना आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम के लिए कोई अन्तिम परीक्षा नहीं होगी क्योंकि इसका मुख्य केन्द्र है आपकी भागीदारी।

ये गतिविधियाँ विद्यालय प्रकार्य में उनकी आवश्यकताओं एवं महत्व के आधार पर गतिविधियों की व्यापक श्रेणी से चुनी जाती है। इस उद्देश्य के लिए चिह्नित गतिविधियों की संपूर्ण संख्या प्रत्येक समूह के लिए निम्नवत सूचीबद्ध हैं। परामर्शदाता/पर्यवेक्षक के सक्रिय दिशा-निर्देश/पर्यवेक्षण में आप इन गतिविधियों को संगठित/आयोजित करेंगे।

विद्यालय आधारित गतिविधियों (SBA) के कुल चार समूह हैं। समूह A, B तथा C प्रत्येक से एक–एक गतिविधि का चयन करना है। समूह D से कुल चार गतिविधियों का चयन करना है जिनमें से उपसमूह (i) तथा (iii) से एक–एक गतिविधि तथा उप–समूह (ii) से दो गतिविधियों का चयन करन है। इस प्रकार चारों समूहों से कुल सात गतिविधियाँ पूरी की जानी आवश्यक हैं। विद्यालय आधारित गतिविधियों की रिपोर्ट कार्यशाला के दौरान ही जमा की जाएगी जिनका मूल्यांकन किया जाएगा और तदनुसार अंक/ग्रेड दिए जायेंगे। समूह A, B तथा C से चयनित गतिविधियों हेतु कुल 60 अंक (3×20) निर्धारित हैं तथा समूह D से चयनित गतिविधियों हेतु कुल 40 अंक (4×10) निर्धारित हैं।

विद्यालय आधारित गतिविधियों (SBA) हेतु कुल 100 अंक निर्धारित हैं।

नोटः

- समूह A, B तथा C में से कोई एक गतिविधि तथा समूह D में से कोई दो गतिविधियाँ सभी समूहों से कुल तीन गतिविधियाँ पर्यवेक्षक द्वारा मूल्यांकित की जायेंगी।
- समूह A, B तथा C में से दो गतिविधियाँ तथा समूह D से दो गतिविधियाँ (सभी समूहों से कुल चार गतिविधियाँ) परामर्शदाता द्वारा मूल्यांकित की जायेंगी।

समूह–A

(इस समूह से केवल एक गतिविधि का चयन करना है।)

- शिक्षा का कानून 2009 का विवेचनात्मक परीक्षण अपने विद्यालय परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका एवं उत्तरदायित्वों के संदर्भ में करें।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा 2005 के दिशानिर्देशक सिद्धांतों पर मार्गदर्शक की उपस्थिति में एक समूह परिचर्चा का आयोजन करें और परिचर्चा से उत्पन्न मुख्य बिन्दुओं पर एक रिपोर्ट तैयार करें।
- नामांकन, पहुँच, धारण और विद्यालय बीच में छोड़ने तथा विद्यालय बीच में छोड़ने को जाँचने के लिए उठाये गए कदमों के संदर्भ में अपने क्लस्टर में प्रारंभिक शिक्षा की स्थिति पर एक रिपोर्ट तैयार करें।
- अपने विद्यालय में लागू आचार संहिता को पढ़ें और सहायक विद्यालय वातावरण बनाने में इसकी भूमिका का विश्लेशण करें।
- विभिन्न स्रोतों (लोककथा/पंचतंत्र/जातक कथा/स्वतंत्रता संघर्ष, और देशभक्ति की कहानियाँ, पाठ्यपुस्तक आदि) से कम–से–कम दो कहानियाँ एकत्र करें और उन मूल्यों की पहचान करें जो कहानियों के माध्यम से प्रोन्नत होती हैं।

समूह–B

(इस समूह से केवल एक गतिविधि का चयन करना है।)

- बच्चों के अधिकारों के उल्लंघन से संबंधित समाचार पत्रों से 20 कतरन इकट्ठा करें, बच्चों के अधिकारों से संबंधित जागरूकता उत्पन्न करने के लिए उपाय सुझायें और अपना सारांश प्रस्तुत करें।
- विद्यालय में एक खेल का आयोजन करें और खेलते हुए बच्चों का निरीक्षण करें और विश्लेषण करें कि कैसे यह उनके भावात्मक और संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करता है।
- अपने पड़ोस के एक बच्चे का केस प्रोफाइल तैयार करें।
- बच्चों के बातचीत का चित्रण करें जो वे अपने साथियों के साथ करते हैं।
- अपने विद्यालय में बच्चों के बीच व्यवहारात्मक मुद्दों/समस्याओं को चिह्नित करें।

समूह–C

(इस समूह से केवल एक गतिविधि का चयन करना है।)

- बहुस्तरीय कक्षाकक्ष में शिक्षण का आयोजन करें और चुनौतियों को चिह्नित करें तथा इस परिस्थिति में उन पर विजय प्राप्त करने के तरीके चिह्नित करें।
- कुछ दृष्टांतों को पहचानें जो उनके समुदाय में लैंगिक भेदभाव को प्रदर्शित करता है और इस प्रकार के लैंगिक भेदभावों को दूर करने के उपाय सुझायें।
- पाँच मिनट के दृश्य/श्रवण सामग्री को तैयार करने के लिए अपने मोबाइल फोन का उपयोग करें और उसका उपयोग अपनी कक्षाकक्ष में एक शिक्षण सामग्री के रूप में करें और इस पर एक रिपोर्ट तैयार करें।

- अपने विद्यालय एवं कक्षाकक्ष परिसर में स्वच्छता बनाये रखने के लिए आप क्या कदम उठायेंगे पहचानें और परिसर को सुंदर बनाने के लिए अपने बच्चों के कला के कार्य का प्रयोग करें।
- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध भोजन, फल और सब्जियों की पहचान करें तथा उनके पोषक मूल्यों को चिह्नित करें।

समूह–D

(इस समूह के उपसमूहों (i) & (iii)से एक–एक तथा उपसमूह (ii) से दो गतिविधियों का चयन करना है।

(i)
- अव्यवस्थित शब्दों वाले पाँच खेलों को तैयार करें।
- फ्लैश कार्डों का एक समूह तैयार करें और व्याख्या करें कि कैसे आप कक्षाकक्ष में इसका उपयोग करने की योजना बना रहे हैं:
- एक भाषा के खेल का आयोजन करें।
- चित्र पठन कार्यविधि का आयोजन करें।
- बच्चों द्वारा संवाद प्रस्तुति की अभिव्यक्तियों पर केंद्रित एक नाटक का आयोजन करें।
- शब्द मानचित्र एवं शब्द शृंखला

(ii)
- एक प्राथमिक उपचार किट तैयार करें।
- अपने परिवेश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों एवं शिक्षण अधिगम में उनके उपयोग की सूची बनायें।
- अपने परिवेश में प्रदूषण के कारणों को पहचानें एवं इसके समाधान के उपाय बतायें।
- अपने समुदाय में प्रचलित सामान्य अंधविश्वासों को पहचानें और उनके उन्मूलन के उपाय सुझायें।
- पर्यावरण विज्ञान/विज्ञान में अपनी पसंद के किसी विषय पर एक संकल्पना मान–चित्रण विकसित करें।
- अपने परिवेश के महत्त्वपूर्ण स्थलों को चिह्नित करते हुए एक निर्देशक मानचित्र तैयार करें।
- अपने राज्य या भारत में विविधता से संबंधित तस्वीरों को एकत्र करें और एक कोलाज तैयार करें।
- नदी, नहर, तालाब, कृषि की फसलें, बागवानी, पुष्प कृषि जैसी अपने क्षेत्रीय संसाधनों का एक मानचित्र विकसित करें।
- स्वतंत्रता संग्राम में अपने राज्य की महिलाओं के योगदानों का दस्तावेज तैयार करें।

(iii)
- आकृतियों को पहचानने में अधिगमकर्ताओं की सहायता के लिए एक शिक्षण अधिगम सामग्री तैयार करें।
- योगाभ्यासों के बारे में अपने समुदाय के 50 लोगों का साक्षात्कार लें और एक सारणी बनायें और इसे एक ग्राफ के रूप में दिखायें।
- कुछ स्मारकों की तस्वीरें खींचे और उनमें अपनायी गईं समानताओं एवं पैटर्नों का पता लगायें।
- एक इनडोर/आउटडोर गणितीय खेल की रचना करें जिनके माध्यम से आप चार संक्रियाओं को पढ़ा सकते हैं।
- अपनी कक्षाकक्ष में गणित सीखने में बच्चों द्वारा सामना की जाने वाली अधिागम समस्याओं का अनुमान लगायें और उनके समाधाान के उपाय बतायें।

कार्यान्वयन

उपर्युक्त विद्यालय आधारित गतिविधियाँ कार्यस्थल पर आयोजित की जा सकती हैं। उन गतिविधियों की अनुसूची परामर्शदाता/पर्यवेक्षक और विद्यालय प्रमुख की सलाह से तैयार की जा सकती है। आप इन गतिविधियों का आयोजन परामर्शदाता, जो कि आपका सहयोगी या विद्यालय प्रमुख हो सकते हैं, के दिशा निर्देश/पर्यवेक्षण में करेंगे। परामर्शदाता/पर्यवेक्षक इन गतिविधियों के आयोजन का पर्यवेक्षण करेंगे। आप से अपेक्षित है कि प्रतिवेदनों को विद्यालय प्रमुख के प्रमाणीकरण के पश्चात् मूल्यांकन के लिए परामर्शदाता को सम्मिलित करें।

आकलन

चूँकि विद्यालय आधारित गतिविधियाँ कार्यक्रम के मूलभूत घटक के रूप में संस्थापित हैं जिनका अधिभार 4 क्रेडिट हैं, अतः इनका मूल्यांकन महत्वपूर्ण हो जाता है। इसलिए श्रेणी पैमाना के सहयोग से आपके निष्पादन का मूल्यांकन करने में परामर्शदाता और पर्यवेक्षक के ऊपर निष्पक्ष रहने का दबाव रहता है।

विद्यालय आधारित गतिविधियों के मूल्यांकन का उत्तरदायित्व परामर्शदाता और पर्यवेक्षक पर होता है। इस प्रक्रिया में परामर्शदाता इन गतिविधियों का पर्यवेक्षण करेंगे जब आप इनका संगठन/आयोजन कर रहें हों। प्रत्येक क्रियाकलाप के आयोजन के पश्चात् आप क्रियाकलाप के संगठन की प्रक्रिया, उपस्थित परेशानियाँ, वैयक्तिक अनुभवों और अधिगमकर्त्ताओं की प्रतिपुष्टि को वर्णित करते हुए एक प्रतिवेदन तैयार करेंगे। प्रत्येक प्रतिवेदन परामर्शदाता के पर्यवेक्षण/टिप्पणी के साथ प्रमाणित होगा। परामर्शदाता इन प्रतिवेदनों को अपने पास रखेगा और पर्यवेक्षक को हस्तान्तरित कर देगा। क्रियाकलापों के आयोजन के समय पर्यवेक्षक को भी इसका पर्यवेक्षण करना चाहिए। अन्तिम मूल्यांकन पर्यवेक्षक द्वारा किया जायेगा। वह प्रत्येक क्रियाकलाप को परामर्शदाता और स्वयं के पर्यवेक्षण के आधार पर अंक प्रदान करेगा। आप के द्वारा आयोजित क्रियाकलापों को अंक प्रदान करने के लिय पर्यवेक्षक उपयुक्त श्रेणी पैमाना का उपयोग करेगा। वह आपके क्रियाकलापों की श्रेणी के लिए 5 बिन्दुओं का पैमाना भी बनायेगा जो आपकी प्रतिवेदन के रखरखाव के उत्साह, विद्यालय आधारित समस्याओं को सुलझाने के लिए आपके द्वारा दिये गये सलाहों की प्रकृति, प्रतिवेदन की व्यापकता और स्वच्छता पर आधारित होंगे।

प्रत्येक क्रियाकलाप के अलग-अलग मूल्यांकन के पश्चात् सभी क्रियाकलापों के लिए एक पूर्ण ग्रेड प्रमाणित किया जायेगा। अंक सूची अग्रिम आवश्यक कार्य के लिए अध्ययन केन्द्र समन्वयक के पास सम्मिलित की जायेगी। प्रतिवेदनों को अध्ययन केन्द्र पर प्रथम कार्यशाला के दौरान उनके सत्यापन के लिए प्रशिक्षु अध्यापकों को लौटा दिये जाते हैं। प्रारूप एवं श्रेणी पैमाना नीचे दिये जा रहे हैं-

विद्यालय आधारित गतिविधियों हेतु रेटिंग स्केल का प्रारूप
(समूह A, B, C तथा D)

शिक्षक प्रशिक्षु का नाम : .....

नामांकन संख्या : .....

विद्यालय का नाम एवं पता : .....

रेटिंग नीचे दिए गये मानकों के अनुसार की जाए।

मानक	रेटिंग (5-उत्कृष्ट, 4-बहुत अच्छा, 2-औसत, 1-असंतोषजनक)				
(i) पहले से तैयार की गई गतिविधियों का विवरण	5	4	3	2	1
(ii) गतिविधि का उद्देश्य	5	4	3	2	1
(iii) गतिविधि के संचालन हेतु उठाए गए कदम	5	4	3	2	1
(iv) गतिविधि के दौरान आयी समस्याओं का समाधान	5	4	3	2	1
(v) विद्यालय वातावरण पर गतिविधि का प्रभाव	5	4	3	2	1
(vi) विद्यालय वातावरण पर गतिविधि का प्रभाव	5	4	3	2	1

40 में से कुल अंक

(समूह A, B तथा C प्रत्येक से एक गतिविधि, कुल 3 गतिविधि कुल 20 अंक समूह क से दो गतिविधि कुल 2 गतिविधि प्रत्येक 10 अंक)

पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर

विद्यालय आधारित गतिविधियों हेतु रेटिंग स्केल का प्रारूप
(समूह A, B, C तथा D)

शिक्षक प्रशिक्षु का नाम : ....

नामांकन संख्या : ....

विद्यालय का नाम एवं पता : ....

रेटिंग नीचे दिए गये मानकों के अनुसार की जाए।

	मानक	रेटिंग (5-उत्कृष्ट, 4-बहुत अच्छा, 2-औसत, 1-असंतोषजनक)				
(i)	पहले से तैयार की गई गतिविधियों का विवरण	5	4	3	2	1
(ii)	गतिविधि का उद्देश्य	5	4	3	2	1
(iii)	गतिविधि के संचालन हेतु उठाए गए कदम	5	4	3	2	1
(iv)	गतिविधि के दौरान आयी समस्याओं का समाधान	5	4	3	2	1
(v)	विद्यालय वातावरण पर गतिविधि का प्रभाव	5	4	3	2	1
(vi)	विद्यालय वातावरण पर गतिविधि का प्रभाव	5	4	3	2	1

40 में से कुल अंक

(समूह A, B तथा C प्रत्येक से एक गतिविधि, कुल 3 गतिविधि कुल 20 अंक समूह ब से दो गतिविधि कुल 2 गतिविधि प्रत्येक 10 अंक)

परामर्शदाता के हस्ताक्षर

पाठ्यक्रम-521
प्रारंभिक शिक्षा संदर्भ, सरोकार और चुनौतियाँ
Course-521
Elementary Education: Context, Concerns and Challenges

कुल अंक 25
Max. Marks 25

दत्त कार्य-1
Assignment-I

टिप्पणी: **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दें।**
Note: **Answer the following questions in about 250 words.**

5 × 3 = 15 *अंक*
5 × 3 = 15 Marks

1. प्रारंभिक शिक्षा के लिए भारतीय संविधान में क्या प्रावधान हैं? क्या आप सोचते हैं कि आज की शिक्षा में इनका उपयोग किया जा रहा है? कारण सहित व्याख्या कीजिए।

   What are the constitutional provisions for Elementary Education in India? Do you think these are being utilized in Today's education. Explain with reasons.

   Or/या

   यू.ई.ई. पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए और आज तक इस लक्ष्य को प्राप्त न करने के कारण बताइए।

   What a short note on UEE and also given reasons for not achieving this goal till date?

2. आर.टी.ई. एक्ट 2009, की प्रमुख अपेक्षाएं क्या हैं? क्या आप अनुभव करते हैं कि इनकी पूर्ति हो रही है? कारणों सहित चर्चा कीजिए।

   What are the major expectations of RTE Act, 2009? Do you feel that these are being fulfilled? Discuss with reasons.

   Or/या

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में शिक्षक-शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या 2009 के निहितार्थ क्या हैं। आलोचनात्मक चर्चा कीजिए।

What are the implications of NCF, 2009 for Teacher Education in the professional development of Teachers? Discuss critically.

3. आपके प्रदेश में प्रारंभिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति पर एक प्रवाह चित्र प्रस्तुत कीजिए जिसमें निम्नलिखित को दर्शाएं : विद्यालयों की संख्या, बुनियादी-सुविधाएं, शिक्षकों की संख्या, विद्यार्थी नामांकन, ड्रापआउट, रिटेंशन और ट्रांजिशन दर, उपलब्धि स्तर और विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात। इन आंकड़ों के आधार पर अपने निष्कर्ष निकालिए।

Present a flow diagram of current status of Elementary Education in your state showings: No. of school, infrastructure, Teacher's No. student enrolment, dropout, retention and transition rates, achievement levels & pupil teacher ratio on the basis of the above data draw your conclusions.

Or/या

प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अपने राज्य की योजनाओं और हस्तक्षेपों का वर्णन कीजिए और इस क्षेत्र की चुनौतियों पर चर्चा कीजिए।

Describe the schemes and interventions at elementary education level in your state and discuss the challenges in this area.

दत्त कार्य-2
Assignment-II

टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दें।
Note: Answer the following questions in about 500 words.

10 अंक
10 Marks

1. वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षकों की उभरती हुई भूमिका क्य है? कक्षा-कक्ष में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए आप क्या करेंगे? उदाहरणों सहित चर्चा कीजिए।

   What is the emerging role of teachers in the present educational scenario in India? What will you do for quality assurance in the classroom Discuss with examples.

   Or/या

   प्रारंभिक शिक्षा में टी क्यू एम को लागू करने के लिए पीडीएसए मॉडल क्या हैं? क्या आप विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के विकास हेतु इसका उपयोग कर सकते हैं? कैसे? व्याख्या कीजिए।

   What is PDSA model for applying TQM in Elementary Education? Can you apply this model for developing moral values among students? Explain how?

पाठ्यक्रम-522
प्रारंभिक विद्यालयी बच्चों की समझ
Course-522
Understanding Elementary School Child

कुल अंक 25
Max. Marks 25

दत्त कार्य-1
Assignment-1

टिप्पणी: **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दें।**
Note: **Answer the following questions in about 250 words.**

5 × 3 = 15 *अंक*
5 × 3 = 15 Marks

1. 'बच्चा' और 'बचपन' की अवधारणा क्या है? बच्चों को उनके बचपन में कौन-सी विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है? चर्चा कीजिए।

   What is the concept of child and childhood? Discuss various problems faced by children during their childhood.

   Or/या

   पूर्व-बाल्यावस्था और उत्तरबाल्यावस्था में होने वाले विविध परिवर्तनों की व्याख्या कीजिए। एक बच्चे के सर्वांगीण विकास में परिवार, पड़ोस, विद्यालय और शिक्षक की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

   Explain the various changes in early childhood and later childhood. Discuss the role of family, neighbourhood, school and teacher in the all round development of a child.

2. किशोरावस्था के दौरान विभिन्न विकासात्मक परिवर्तनों और किशोरों की समस्याओं पर चर्चा कीजिए।

   Discuss various developmental changes during adolescent stage and the problems faced by adolescents.

   Or/या

कशोरों की आवश्यकताएं और आकांक्षाएं क्या हैं? और एक शिक्षक इनकी पूर्ति हेतु किस प्रकार सहायता कर सकती/ता है? व्याख्या कीजिए।

What are the implications of NCF, 2009 for Teacher Education in the professional development of Teachers? Discuss critically.

3. बाल अधिकारों की क्या आवश्यकता है? इस संदर्भ में भारत में विभिन्न नीतियों और विधानों का वर्णन कीजिए।

What is the need of child rights? Describe various policies and legislations in this context in India.

Or/या

बाल-अधिकारों की सुरक्षा की आवश्यकता क्या है? बाल-अधिकारों को सुरक्षित रखने में एनसीपीसीआर, शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका का वर्णन कीजिए।

Why protection of child rights in needed? Describe the role of NCPCR, teachers and parents in protecting the child rights.

दत्त कार्य-2
Assignment-II

टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दें।
Note: Answer the following questions in about 500 words.

10 अंक
10 Marks

1. अधिगम के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पक्ष क्या हैं? एक शिक्षक के नाते आप अनुकूल-अधिगम वातावरण के निर्माण हेतु इनका उपयोग कैसे करेंगे? अपने स्वयं के अनुभवों के आधार पर व्याख्या कीजिए।

   What are the religious, cultural and social dimensions of learning? As a teacher how will you use these for making conductive learning environment. Explain on the basis of your own classroom experiences.

   Or/या

   बचपन की सामाजिक-भावनात्मक समस्याएं क्या हैं? एक शिक्षक के नाते आप इन्हें दूर करने के लिए क्या करेंगे? अपने कक्षा-कक्ष अनुभवों के आधार पर व्याख्या कीजिए।

   What are the socio-emotional problems of childhood? As a teacher what will you do to overcome these? Explain on the basis of your classroom experiences.

पाठ्यक्रम-523
पाठ्यचर्या एवं शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया
Course-523
Curriculum and Teaching-Learning Process

कुल अंक 25
Max. Marks 25

दत्त कार्य-1
Assignment-1

टिप्पणी: **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दें।**
Note: **Answer the following questions in about 250 words.**

5 × 3 = 15 *अंक*
5 × 3 = 15 Marks

1. पाठ्यक्रम-विकास की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

   Describe different steps of curriculum development process in brief.

   Or/या

   प्राचीन समय में वर्तमान समय तक शिक्षण-शास्त्र के विभिन्न पक्षों में आए परिवर्तनों की चर्चा संक्षेप में कीजिए। क्या आप अनुभव करते हैं कि ये परिवर्तन/बदलाव शिक्षक की शिक्षण-दक्षता में वृद्धि कर रहे हैं? कारण बताइए।

   Discuss the changes in various dimensions of pedagogy from ancient times till recent times in brief. Do you feel that these changes are enhancing teacher's efficiency in teaching. Give reasons.

2. कक्षा III-V तक के किसी-सी विषय से कोई एक शीर्षक/पाठ चुनकर उसके लिए 5ई मॉडल के आधार अधिगम क्रियाकलापों का आरेखण कीजिए।

   Select any topic from any subject from class III-V and design the learning activities on the basis of 5E model of learning.

   Or/या

समावेशी–कक्षा–कक्ष क्या है? ऐसे कक्षा–कक्ष हेतु आप अधिगम अनुभवों को कैसे डिजाइन करेंगे? संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

What is an inclusive classroom? How will you design the learning experiences for such classroom? Explain in brief.

3. अधिगम का आकलन के लिए आकलन और में आकलन में अंतर बताइए। एक शिक्षक के रूप में आप इन तीनों प्रकार के आकलन को कैसे संचालित करते हैं? अपने स्वयं के उदाहरणों द्वारा व्याख्या कीजिए।

Differentiate between assessment of learning, for learning and in learning? As a teacher how do you conduct all the three types of assessment? Explain with your own examples.

Or/या

मोबाइल अधिगम क्या है? अधिगम को सृजित और साझा करने में आप मोबाइल का उपयोग कैसे कर सकते हैं? उदाहरणों के साथ व्याख्या कीजिए।

What is mobile-learning ? How can you use mobile in creating and sharing of knowledge for your students? Explain with examples.

दत्त कार्य-2
Assignment-II

टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दें।
Note: Answer the following questions in about 500 words.

10 अंक
10 Marks

1. प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अधिगम में वृद्धि हेतु संस्कृति, कला, खेल-कुद और कला का क्या महत्त्व है। विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु आप इनका उपयोग किस प्रकार करेंगे? उपयुक्त उदाहरणों द्वारा चर्चा कीजिए।

   What is the importance of culture games and Art in enhancing learning of the students at primary level? How will you utilize these in holistic development of your students? Discuss with suitable examples.

   Or/या

   'योग' क्या है? विद्यालयों में यह क्यों महत्त्वपूर्ण है? एक कक्षा-कक्ष में 'योग' तकनीकों को उपयोग करने के क्या लाभ हैं? उपयुक्त उदाहरणों के साथ व्याख्या कीजिए।

   What is yoga? Why it is important in schools? What are the benefits of utilizing yoga techniques in a classroom. Explain with suitable examples.

Course-524: Pedagogy of School Subjects
पाठ्यक्रम-524 विद्यालयी विषयों का शिक्षण–शास्त्र

Max. Marks 25
कुल अंक 25

Block 1: Pedagogy of Languages
खण्ड–1: भाषाओं का शिक्षण शास्त्र

Max. Marks 07
कुल अंक **07**

Assignment-I
दत्त कार्य-1

Note: Answer the following question in about 200 words.
टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में दें।

3 Marks
3 अंक

1. Which tools and techniques will you use for assessing reading skills of students? Explain one technique and tool with suitable example.

   विद्यार्थियों में पठन कौशल के आकलन हेतु आप कौन–कौन से उपकरणों एवं तकनीकों का उपयोग करेंगे? किसी एक उपकरण एवं तकनीक की उचित उदाहरण की सहायता से व्याख्या कीजिए।

   Or/ अथवा

   Choose any topic of your choice related to language and prepare an activity, a game and a worksheet that to be included in a learner centred lesson plan.

   भाषा से संबंधित अपनी पसंद के किसी एक प्रकरण का चयन कीजिए तथा इस प्रकरण पर कोई एक गतिविधि, एक खेल तथा एक कार्यपत्रक का निर्माण कीजिए जिन्हें बाल केंद्रित पाठ योजना में शामिल किया जा सके।

Assignment-II
दत्त कार्य-2

Note: Answer the following question in about 400 words.
टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 400 शब्दों में दें।

4 Marks
4 *अंक*

2. Discuss Multilingualism as a Resource and Strategy. Share your experience of how you used your mother tongue in the English class during your practice of teaching. Did you find it was a resource, or a hindrance? Give likely reasons for your answer.

बहुभाषिकता की संसाधन एवं युक्ति के रूप में चर्चा कीजिए। अभ्यास शिक्षण के दौरान अंग्रेजी की कक्षा में आप अपनी मातृभाषा का उपयोग किस प्रकार करेंगे। आप अपनी मातृभाषा को संसाधन के रूप में पाते हैं या एक अवरोधक के रूप में। अपने पक्ष में तर्क दीजिए।

Or/ अथवा

Discuss the importance of communication skill in developing language skill. How would you promote speaking habits among learners who do not like to speak? Write an activity using the classroom as a resource in this context.

भाषा कौशलों के विकास में संप्रेषण कौशल के महत्व की चर्चा कीजिए। ऐसे बच्चे जो बोलना पसंद नही करते हैं, उनमें बोलने की आदत को बढ़ावा किस प्रकार दे पायेंगे? इस संदर्भ में कक्षाकक्ष को संसाधन मानते हुए एक गतिविधि लिखिए।

Block 2: Pedagogy of Environmental Studies
खण्ड–1: पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण शास्त्र

Max. Marks 06

कुल अंक 06

Assignment-I
दत्त कार्य-1

Note: Answer the following question in about 200 words.

टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में दें।

2 Marks
2 *अंक*

1. What are the objectives of teaching EVS (with special science to NCF 2005). Explain with examples the terms learning about Environment, clearing in Environment and learning for Environment.

   एन.सी.एफ.-2005 के विशेष संदर्भ में पर्यावरण शिक्षा शिक्षण के उद्देश्य लिखें। निम्नलिखित शब्दावलियों में उदाहरण देकर अंतर स्पष्ट करें:- पर्यावरण के बारे में सीखना, पर्यावरण के माध्यम से सीखना और पर्यावरण के लिए सीखना।

   Or/या

   What is cooperative learning approach? What are its advantages? Write down the three principles of cooperative learning.

   सहयोगी अधिगम उपागम क्या है? इसके क्या लाभ हैं? सहयोगी अधिगम के तीन नियम लिखें।

Assignment-II
दत्त कार्य-2

Note: Answer the following question in about 400 words.

टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 400 शब्दों में दें।

4 Marks
4 *अंक*

2. What is the importance of using various learning resources in EVS teaching? Explain the importance of Community resources, Institutional resources, Media resources and Technological resources in teaching EVS.

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण में विभिन्न अधिगम संसाधनों का क्या महत्व है। निम्नलिखित संसाधनों का पर्यावरण अध्ययन शिक्षण में महत्व समझाएं- सामुदायिक संसाधन, संस्थानीय संसाधन, मीडिया संसाधन व प्रौद्योगिकीय संसाधन।

Or/या

What do you mean by continuous and comprehensive evaluation? Differentiate between formative and summative evaluation with the help of an example. What characteristics make evaluation effective?

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं? रचनात्मक एवं संकलित मूल्यांकन में क्या अंतर है? उदाहरण देकर समझाएं। कौन से लक्षण मूल्यांकन को प्रभावी बनाते हैं।

Block 3: Pedagogy of Mathematics
खण्ड–3: गणित का शिक्षण–शास्त्र

6 Marks
6 अंक

Assignment-I
दत्त कार्य-1

Note: Answer the following question in about 200 words.

टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में दें।

2 Marks
2 अंक

1. All round development of a human being can be done with the help of mathematics. With reference to this line explain the importance of mathematics. Write objectives of teaching mathematics at elementary level.

   मानव का सर्वांगीण विकास गणित की सहायता से किया जा सकता है। इस कथन के संदर्भ में गणित के महत्व की व्याख्या कीजिए। प्रारंभिक स्तर पर गणित शिक्षण के उद्देश्य लिखिए।

   Or/ अथवा

   Choose an activity and explain how it will be helpful in developing creative abilities among learners through Mathematics.

   किसी एक गतिविधि का चुनाव कीजिए तथा व्याख्या कीजिए कि शिक्षार्थियों में गणित के माध्यम से सृजनात्मक कौशलों के विकास में यह गतिविधि किस प्रकार आपकी सहायता कर सकती है?

Assignment-II
दत्त कार्य–2

Note: Answer the following question in about 400 words.

टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 400 शब्दों में दें।

4 Marks
***4* अंक**

2. Select any topic of your choice from mathematics textbook of class VI. Suggest a teaching learning material and explain how you will use this teaching learning material to teach this topic. Also suggest that how this teaching learning material will be helpful in teaching of other concepts of mathematics.

कक्षा 6 की गणित की पाठ्यपुस्तक से किसी एक प्रकरण का चयन कीजिए। इस प्रकरण को सिखाने हेतु एक शिक्षण अधिगम सामग्री सुझाइए तथा व्याख्या कीजिए कि आप इसका उपयोग इस प्रकरण को सिखाने में किस प्रकार करेंगे। यह भी सुझाइए कि आप इस शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग गणित की कौन–सी अन्य अवधारणाओं को सिखाने में कर सकते हैं।

Or/ अथवा

Select any topic of your choice from mathematics textbook of class VI. How you will use mathematics laboratory to teach this topic. Explain with suitable examples.

कक्षा 6 की गणित की पाठ्यपुस्तक से किसी एक प्रकरण का चयन कीजिए। इस प्रकरण को सिखाने हेतु आप गणित प्रयोगशाला का उपयोग किस प्रकार करेंगे। उचित उदाहरणों सहित व्याख्या कीजिए।

Block 4: Pedagogy of Science

खण्ड 4: विज्ञान का षिक्षण षास्त्र

Max. Marks 06

कुल अंक 06

Assignment-I
दत्त कार्य-1

Note: Answer the following question in about 200 words.

टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में दें।

2 Marks
2*अंक*

1. What is scientific method? Explain different steps of scientific method.

   वैज्ञानिक विधि क्या है? वैज्ञानिक विधि के विभिन्न चरण समझाएं।

   Or/या

   Explain 'Discovery approach' of teaching science with the help of a suitable example.

   एक उपयुक्त उदाहरण द्वारा विज्ञान शिक्षण के 'खोज उपागम' को समझाएं।

Assignment-II
दत्त कार्य-2

Note: Answer the following question in about 400 words.

टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 400 शब्दों में दें।

4 Marks
4 *अंक*

2. What is the need of 'diagnostic testing' in the teaching-learning process? How are the results of diagnostic testing used in providing 'remedial teaching'? Explain with a suitable example.

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में निदानात्मक परीक्षण की क्या आवश्यकता है? निदानात्मक परीक्षण के परिणामों को 'उपचारात्मक शिक्षण' को किस प्रकार प्रयोग किया जाता है? एक उपयुक्त उदाहरण द्वारा समझाएं।

Or/या

What is the use of preparing a lesson plain in science teaching? What questions need to be answered while preparing a lesson plan? Write down important steps of writing a lesson plan.

विज्ञान शिक्षण में पाठ-योजना बनाने का क्या लाभ हैं? पाठ-योजना बनाते समय किन प्रश्नों के उत्तर ढूंढना आवश्यक है? पाठ-योजना बनाने के प्रमुख चरण लिखें।

Block 5: Pedagogy of Social Studies

खण्ड–5: सामाजिक अध्ययन का शिक्षण शास्त्र

Max. Marks 06

कुल अंक 06

Assignment-I

दत्त कार्य-1

Note: Answer the following question in about 200 words.

टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में दें।

2 Marks
2 अंक

1. List the subject that comes under 'Social Studies'. Write the objectives of teaching social studies at upper primary level.

   सामाजिक-अध्ययन के अंतर्गत आने वाले विषयों की सूची बनाइए। उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्य लिखिए।

   Or/या

   What is the need of learning resources in teaching-learning of social studies? Explain different types of learning resources you can use in teaching social science and how?

   सामाजिक अध्ययन के शिक्षण-अधिगम में अधिगम संसाधनों की क्या आवश्यकता है? विभिन्न प्रकार के अधिगम संसाधनों की व्याख्या कीजिए, जिन्हें आप सामाजिक अध्ययन शिक्षण में उपयोग में ला सकते हैं और कैसे?

Assignment-II
दत्त कार्य-2

Note: Answer the following question in about 400 words.

टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 400 शब्दों में दें।

4 Marks
4 *अंक*

2. Write the expected common characteristics of a learner centred social-studies class. Give an example to develop any one characteristic in you class.

एक शिक्षार्थी केन्द्रित सामाजिक अध्ययन कक्षा की अपेक्षित सामान्य विशेषताओं को लिखिए। अपनी कक्षा में ऐसी किसी एक विशेषता के विकास हेतु एक उदाहरण दीजिए।

Or/या

What is the need of assessment of students learning in social studies? What type of tests and techniques will you use in accessing the students in social studies and why?

सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थियों के अधिगम के आकलन की क्या आवश्यकता है? सामाजिक अध्ययन में अपने विद्यार्थियों के आकलन हेतु आप किन उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करेंगे और क्यों?